फालुन दाफा

आगे प्रगति के लिए आवश्यक लेख

(हिंदी संस्करण)

ली होंगज़ी

अनुक्रमणिका

अनु क्र	विषय
1.	धन के साथ सद्गुण
2.	विस्तृत और अथाह
3.	सच्ची साधना
4.	समभाव रखें
5.	ज्ञानोदय
6.	व्यक्ति देख क्यों नहीं पाता
7.	फा को सीखना
8.	सहायता कैसे प्रदान करें
9.	आकाश
10.	लोक
11.	रिक्तता क्या है?
12.	दृढ़ता
13.	बुद्धमत की शिक्षाएं बुद्ध फा का सबसे अशक्त और संक्षिप्त अंश है
14.	प्रज्ञा क्या है?
15.	यह साधना अभ्यास है, कोई पेशा नहीं
16.	सेवा निवृति के प्रश्चात साधना अभ्यास
17.	जब फा सही होगा
18.	ऋषि
19.	एक स्पष्ट स्मरण पत्र
20.	आप साधना अभ्यास किसके लिए करते हो?
21.	बुद्ध फा की शब्दावली
22.	आतंरिक साधना से बाह्य शांत करें
23.	मोहभावों से और छुटकारा
24.	पुष्टिकरण
25.	एक साधक सहज ही इसका अंश है
26.	सहनशीलता (रेन) क्या है?
27.	मी-शिन (अन्धविश्वास) क्या है?
28.	रोग कर्म
29.	साधक के लिये टालने योग्य वस्तुएं
30.	उत्तम सामंजस्य
31.	त्रुटि-हीन
32.	साधना और कार्य
33.	सुधार
34.	अपरिवर्तनीय
35.	निराधार वचन न कहें
36.	जागृति
37.	फा की स्थिरता
38.	साधना अभ्यास और जिम्मेदारी उठाना

39. शास्त्रों की हस्तलिखित प्रतियों का नियंत्रण
40. फा सम्मेलन
41. शिजिआज़ुआंग दाफा सामान्य सहायक केंद्र के नाम एक पत्र
42. आप के चरित्र में सुधार
43. शान (करूणा) की एक संक्षिप्त व्याख्या

44 “फा व्यक्ति के चरित्र का सूधार” एक परिशिष्ट
45 बुद्ध स्वभाव एवं शैतानी स्वभाव
46 प्रचंड रहस्योद्घाटन
47 साधना अभ्यास राजनितीक नही है
48 प्रभारी भी एक साधक ही है
49 साधना अभ्यास क्या है?
49 दाफा हमेशा के लिये हिरे की तरह शुध्द रहेगा
50 और अधिक समझ
51 चेतावनी परामर्श
52 दाफा को चूराया नही जा सकता
53 संबोधी क्या है?
54 मानवजाती का पूनर्निर्माण
55 अवसान (क्षय)
56 बुद्ध स्वभाव में विलोपता
57 स्पष्ट समझदारी
58 हमेशा के लिये ध्यान में रखिये
59 गहरा आघात
60 मुल्यांकन कसौटी पर एक और टिप्पणी
61 अंतिम निष्कर्ष
62 समय से संवाद
63 दाफा पर समझ
64 मानव मोहभाव छोडीये एवं सच्ची साधना जारी रखीये
65 मध्यम मार्ग लिजीये
66 फा मानव हृदय को सूधारता है
67 भिक्षू एवं भिक्षूणी अभ्यासीयो के लिये सिद्धांत
68 वातावरण
69 जडो को खोदना
70 आप किस के लिये अस्तित्व में है?
71 दाफा में विलीन हो जाइये।
72 बुद्ध फा और बुद्धमत
73 दाफा का इस्तेमाल नही किया जा सकता
73 दृढनिश्चय एवं दृढता
74 शैतानी स्वभाव का शूद्धीकरण किजीए

लुनयु[1]

दाफा[2] विधाता का ज्ञान है। यह उस सृष्टि का आधार है जिस पर स्वर्ग, पृथ्वी एवं ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ है। इसमें सभी कुछ समाहित है, अत्यंत सूक्ष्म से लेकर वृहत से वृहत्तम तक, यह ब्रह्माण्ड के प्रत्येक स्तरों पर भिन्न रूप से अभिव्यक्त होता है। सूक्ष्मजगत की गहराईयों से जहाँ सूक्ष्मतम कण सर्वप्रथम प्रकट होते हैं, इसमें परत दर परत असंख्य कण हैं, जो आकार में सूक्ष्म से विशाल तक होते हुए, उन बाहय आयामों तक पहुँचते हैं जिनका मानवजाति को ज्ञान है—परमाणुओं, अणुओं, ग्रहों एवं आकाशगंगाओं तक—और उससे आगे, जो और भी विशाल है। विभिन्न आकार के कण विभिन्न आकार के जीवनों तथा विभिन्न आकार के विश्वों का निर्माण करते हैं जो ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्यापक हैं। कणों के विभिन्न स्तरों में से किसी में भी जीवों को अगले बड़े स्तर के कण उनके आकाशों में ग्रहों के रूप में प्रतीत होते हैं, एवं यह समस्त स्तरों में सत्य है। ब्रह्माण्ड के हर स्तर के जीवों को—यह अनंत तक जाता प्रतीत होता है। यह दाफा था जिसने काल एवं अवकाश, अनेकों जीवों व प्रजातियों, तथा सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया; सब जो अस्तित्व में है इसी से है, और कुछ भी इससे बाहर नहीं है। ये सभी, दाफा के गुणों *सत्य, करुणा और सहनशीलता* की, विभिन्न स्तरों पर स्पर्श अभिव्यक्तियाँ हैं।

मनुष्यों के अंतरिक्ष की खोज एवं जीवन के अनुसंधान के तरीके कितने भी उन्नत क्यों न हों, प्राप्त जानकारी ब्रह्माण्ड के एक निम्न स्तर पर इस एक आयाम के कुछ हिस्सों तक सीमित है, जहाँ मनुष्यों का वास है। पूर्वऐतिहासिक काल की सभ्यताओं के दौरान भी मनुष्यों ने दूसरे ग्रहों की खोज की थी। किन्तु सभी ऊंचाइयां एवं दूरियां हासिल करने पर भी, मानवजाति कभी इस आयाम से बाहर नहीं निकल पाई जहाँ इसका अस्तित्व है। ब्रह्माण्ड की सही तस्वीर मानवजाति कभी समझ नहीं पायेगी। यदि मनुष्य को ब्रह्माण्ड, काल-अवकाश, एवं मानव शरीर के रहस्यों को समझना है, उसे एक सच्चे पथ की साधना करनी होगी और अपने स्तर में सुधार करते हुए सच्ची ज्ञानप्राप्ति करनी होगी। साधना से उसका नैतिक चरित्र उन्नत होगा, तथा एक बार वह बुराई से वास्तविक अच्छाई, और दुर्गुण से सद्गुण में अंतर करना सीख जाता है, तथा वह मानव स्तर से आगे चला जाता है, वह ब्रह्माण्ड की वास्तविकताओं तथा दूसरे आयामों व स्तरों के जीवन को देख और संपर्क कर पायेगा।

जबकि लोग अक्सर दावा करते हैं कि उनके वैज्ञानिक लक्ष्य "जीवन की गुणवत्ता सुधारने" के लिए हैं, यह तकनीकी प्रतिस्पर्धा है जो उनसे यह करवाती है। और ज्यादातर मामलों में वे तभी फलित हुए जब लोगों ने दिव्यता को हटा दिया और नैतिक संहिता का परित्याग कर दिया जो आत्म-नियंत्रण के लिए आवश्यक हैं। इन्ही कारणों से अतीत की सभ्यताओं का कई बार विनाश हुआ। लोगों की खोजें इस भौतिक जगत तक ही सीमित रहती हैं, तथा विधियां ऐसी हैं कि केवल उसी का अध्ययन किया जाता है जिसे मान्यता प्राप्त है। इस बीच, वस्तुएं जो मानव आयाम में अस्पर्श और अदृश्य हैं, किन्तु जो निष्पक्ष रूप से विद्यमान हैं और सही मायनों में खुद को इस वर्तमान जगत में प्रत्यक्ष करती हैं—जैसे कि अध्यात्म, श्रद्धा, दिव्य वचन, एवं चमत्कार—इनको निषेध माना जाता है, क्योंकि लोगों ने दिव्यता को बहिष्कृत कर दिया है।

यदि मानव जाति अपने चरित्र, आचरण, एवं सोच को नैतिक-मूल्यों पर आधारित करके सुधारने में सक्षम होती है, तो सभ्यता का स्थायित्व, और यहाँ तक कि मानव जगत में फिर से चमत्कारों का होना संभव होगा। अतीत में अनेक बार, इस संसार में ऐसी संस्कृतियाँ प्रकट हुईं जो उतनी दैवीय थीं जितनी मानवीय और लोगों को जीवन व् ब्रह्माण्ड की सच्ची समझ पर पहुँचने में मदद की। जब लोग दाफा को इस संसार में अभिव्यक्त होने पर उचित सम्मान व् श्रद्धा प्रदान करेंगे, तो वे, उनका वर्ग, या उनका राष्ट्र आशीर्वाद या सम्मान प्राप्त करेंगे।

यह दाफा था—ब्रह्माण्ड का महान पथ—जिसने ब्रह्माण्ड, विश्व, जीवन तथा सारे सृजन का निर्माण किया। कोई जीवन जो दाफा से विमुख हो जाता है, वास्तव में भ्रष्ट है। कोई भी व्यक्ति जो दाफा के साथ समन्वय में हो सकता है सच में एक अच्छा व्यक्ति है, और स्वास्थय एवं सुख से पुरस्कृत व् धन्य होगा। और कोई साधक जो दाफा के साथ एक हो जाता है वह एक ज्ञानप्राप्त व्यक्ति है—दिव्य।

ली होंगज़ी
मई 24, 2015

---

1 लुनयु – टिप्पणी
2 दाफा – महान सिद्धांत या महान मार्ग

(1) धन के साथ सद्‌गुण

पूर्वजों ने कहा है, "पैसा इस भौतिक शरीर से बाहर की वस्तु है।" यह सभी जानते हैं, फिर भी सभी इसके पीछे लगे रहते है। एक युवा इसे अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए चाहता है; एक युवती इसे आकर्षण और विलासिता के लिए चाहती है; एक वृद्ध व्यक्ति इसे वृद्धावस्था में अपनी देख-भाल के लिए चाहता है; एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति इसे अपनी प्रतिष्ठा के लिए चाहता है; एक सरकारी अधिकारी इसके लिए अपना कर्त्तव्य निभाता है, इत्यादि। इस प्रकार सभी इसके पीछे भागते हैं।

कुछ लोग इसके लिए प्रतिस्पर्धा और झगड़ा भी करते है; जो लोग अति-महत्वकांक्षी हैं वे इसके लिए संकट भी मोल लेते हैं, उग्र स्वाभाव के लोग इसके लिए हिंसा का प्रयोग करते है; ईर्ष्यालु लोग इसके लिए गुस्से में अपने प्राण भी दे देते हैं। यह शासक और अधिकारियों का उत्तरदायित्व है कि धन जन साधारण तक पहुंचे, तदापि धन की उपासना सबसे बुरी नीति है जो कोई अपना सकता है। बिना सद्‌गुण (द) के धन सभी संवेदनशील प्राणियों को नुकसान पहुंचाएगा, जबकि धन के साथ सद्‌गुण की आशा सभी लोग करते हैं। इसलिए, व्यक्ति बिना सद्‌गुण के समर्थन के धनी नहीं हो सकता।

सद्‌गुण पूर्व जन्मों से जमा होता रहता है। एक राजा बनना, अधिकारी बनना, धनवान होना, या कुलीन होना, ये सब सद्‌गुण से प्राप्त होते हैं। सद्‌गुण नहीं तो कोई प्राप्ति नहीं; सद्‌गुण की हानि का अर्थ है सभी वस्तुओं की हानि। इसलिए जो लोग सत्ता और धन प्राप्ति की अपेक्षा करते हैं उन्हें पहले सद्‌गुण जमा करना चाहिए। तकलीफ उठाने से और अच्छे कार्य करने से व्यक्ति जनता के बीच सद्‌गुण जमा कर सकता है। यह प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को कारण और प्रभाव का नियम समझना आवश्यक है। यह समझने से अधिकारियों और जन साधारण को आत्म संयम अपनाने में मदद होगी और जगत में समृद्धि और शान्ति बनी रहेगी।

ली होंगज़ी
जनवरी 27, 1995

(2) विस्तृत और अथाह

फालुन दाफा[5] के सिद्धान्त किसी भी व्यक्ति को, उसके धार्मिक विश्वासों के साथ, उसके साधना अभ्यास में मार्ग दर्शन प्रदान कर सकते है। यह विश्व का सिद्धान्त है, एक सच्चा फा जो पहले कभी नहीं सिखाया गया। विगत में लोगों को इस विश्व के सिद्धांत (बुद्ध फा) को जानने की अनुमती नहीं थी। प्राचीन काल से लेकर आज तक यह मानव समाज के शैक्षणिक व नैतिक सिद्धांतों से परे है। जो कुछ धर्मों में सिखाया गया था और जो कुछ लोगों ने विगत में अनुभव किया वे केवल सतही और उथले सिद्धांत थे। इसके विस्तृत और अथाह, गहन आंतरिक अर्थ केवल उन साधकों के सामने प्रकट हो सकते है, और उनके द्वारा अनुभव किये और समझे जा सकते हैं, जो सच्ची साधना के विभिन्न स्तरों पर हैं। केवल तभी कोई व्यक्ति यह वास्तव में देख सकता हैं कि फा क्या है।

ली होंगज़ी

फरवरी 6, 1995

(3) सच्ची साधना

मेरे सच्चे साधना करने वाले शिष्यों, जो मैंने आपको सिखाया है वह बुद्ध और ताओ की साधना का फा है। फिर भी, आप मेरे सामने अपने सांसारिक हितों को त्यागने का दुःख व्यक्त करते हो, जबकि आपको इस बात की चिंता होनी चाहिए कि आप साधारण मानव बंधनों को छोड़ पाने में असमर्थ रहे हो। क्या यह साधना है? क्या आप साधारण मानव बंधनों को छोड़ पाते हैं, यह आपके एक महान व्यक्ति बनने के मार्ग में एक निर्णायक परीक्षा है। हर एक शिष्य जो सच्ची साधना करता है उसे इसमें सफल होना आवश्यक है, क्योंकि यह एक साधक और साधारण व्यक्ति के बीच की विभाजन रेखा है।

वास्तव में, जब आप साधारण लोगों के बीच अपनी प्रतिष्ठा, आत्म हित, और भावनाओं की हानि के बारे में दुखी होते हैं, तो यह यही संकेत करता है की आप अपने साधारण मानव बंधनों को नहीं छोड़ सकते। यह अवश्य याद रखें : साधना स्वयं कष्टप्रद नहीं है - इसकी कुंजी इस बात में है कि आप साधारण मानव बंधनों को छोड़ पाने में असमर्थ रहते हैं। जब आप अपनी प्रतिष्ठा, हितों और भावनाओं को छोड़ रहे होंगे, केवल तभी आपको दर्द अनुभव होगा।

आप यहाँ एक पवित्र, शुद्ध और अत्यंत भव्य लोक से आ गिरे क्योंकि आपको उस स्तर पर मोहभाव उत्पन्न हो गए थे। इस जगत में गिरने के बाद, जो तुलना में बहुत मलिन है, इसके बजाय कि आप साधना करके वापस जाने की जल्दी करें, आप इस मलिन जगत की उन मलिन वस्तुओं को नहीं छोड़ पाते जिनसे आप लिपटे हैं, और आप छोटे छोटे नुकसान पर भी दुःख मनाते रहते हैं। क्या आप जानते हैं की आप को बचाने के लिए बुद्ध ने कभी साधारण लोगों से भोजन के लिए भिक्षा मांगी थी? आज, मैं फिर द्वार पूरी तरह खोल रहा हूँ, और आप को बचाने के लिए यह दाफा सिखा रहा हूँ। जो अनेक कठिनाइयाँ मैंने सही हैं उनके बारे में मैंने कभी कड़वाहट महसूस नहीं की। तो फिर आप के पास क्या है जो आप नहीं त्याग सकते? क्या आप अपने गह गहराई में छिपी उन वस्तुओं को स्वर्गलोक में ला सकते है जिन्हें आप नहीं छोड़ सकते?

ली होंगज़ी
मई 22, 1995

(4) समभाव रखें

मैने कुछ अभ्यासियों को बताया है की चरम विचार, विचार-कर्म से उत्पन्न होते है। किन्तु बहुत से शिष्य अब अपने सभी रोजमर्रा जीवन के बुरे विचारों को विचार-कर्म समझने लगे हैं। यह अनुचित है। यदि आपके कोई बुरे विचार नहीं होंगे तो आप के पास साधना करने के लिए क्या रह जायेगा? अगर आप इतने शुद्ध हो तो क्या आप पहले से ही एक बुद्ध नहीं हैं? ऐसी समझ अनुचित है। केवल जब आप का मन उग्र रूप से बुरे विचार दर्शाता है या गुरु, दाफा, और अन्य लोगों के बारे में अपशब्द सोचता है, इत्यादि, और आप उससे छुटकारा नहीं प्राप्त कर सकते या उन्हें नहीं दबा सकते, तब वह विचार-कर्म है। किन्तु कुछ अशक्त विचार-कर्म भी होते हैं, हालाँकि वे सामान्य विचारों और धारणाओं से अलग होते है। आप को इस बारे में स्पष्ट होना चाहिए।

ली होंगज़ी
मई 23, 1995

(5) ज्ञानोदय

इस मलिन मानवीय जगत में, मोती और मछली की आँखें मिल-जुल गयी हैं। एक तथागत को इस जगत में चुपके से आना पड़ता है। जब वे फा सिखाते हैं, तो दुष्ट प्रथाएं अवश्य बाधा डालती हैं। ताओ और आसुरिक मार्ग एक ही समय में और एक ही जगत में सिखाये जाते हैं। सच और झूठ के बीच, ज्ञानोदय महत्वपूर्ण है। इनमें अंतर कैसे पहचानें? असाधारण लोग अवश्य ही होते हैं। जिनका वास्तव में कोई पूर्व निर्धारित संबंध है और जो ज्ञान प्राप्त कर सकते है, वे एक के पीछे एक आएंगे, ताओ में प्रवेश करेंगे और फा प्राप्त करेंगे। वे अच्छाई और बुराई में भेद कर पाएंगे, सच्ची शिक्षा प्राप्त करेंगे, अपने शरीर हलके करेंगे, अपने ज्ञान में वृद्धि करेंगे, अपने ह्रदय समृद्ध करेंगे, और फा की नाव में सवार हो कर, सुगमता से यात्रा करेंगे। कैसा अद्भुत होगा! भरपूर प्रयत्न के साथ आगे बढ़ें, परिपूर्णता तक।

जो इस जगत में बिना मार्गदर्शन और निम्न ज्ञानोदय गुण के साथ जी रहे हैं, वे पैसे के लिए जीते हैं और सत्ता के लिए मरते हैं, वे तुच्छ लाभों के लिए भी प्रसन्न या चिंतित होते रहते हैं। वे एक दुसरे के विरूद्ध बुरी तरह प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिससे जीवन भर कर्म एकत्रित करते रहते हैं। जब ऐसे लोग फा को सुनते हैं, तो वे इस पर हँसते हैं और अपने मुंह से 'अन्धविश्वास' शब्द उगल देते हैं, क्योंकी उनके लिए अपने मन की गहराई से इसे समझना और विश्वास करना अवश्य ही कठिन होगा। ये लोग निम्न श्रेणी के लोग हैं जिन्हें बचाना कठिन होता है। उनका कर्म इतना अधिक है कि इसने उनके शरीर को पूरी तरह घेर लिया है और उनकी बुद्धि को बंधित कर दिया है; उनकी मूल प्रकृति खो गयी है।

ली होंगज़ी
जून 14, 1995

(6) व्यक्ति देख क्यों नहीं पाता

"देखा तो विश्वास किया; नहीं देखा तो विश्वास नहीं।" यह एक निम्न व्यक्ति का दृष्टिकोण है। मनुष्य भ्रम में खोये हैं और बहुत सा कर्म उत्पन्न कर चुके हैं। जब उनकी मूल प्रकृति छिपी हुई है तो वे कैसे देख पाएंगे? देखने से पहले ज्ञानोदय आवश्यक है। अपने मन को साधना में लगायें और अपने कर्म दूर करें। जब आपकी मूल प्रकृति उभर कर आयेगी तब आप देख पाएंगे। फिर भी, देखे या बिना देखे, एक असाधारण व्यक्ति परिपूर्णता तक पहुँचने के लिए अपने ज्ञानोदय पर निर्भर कर सकता है। लोग कदाचित देख सकें या न देख सकें, और यह उनके स्तरों और उनके जन्मजात गुण द्वारा तय होता है। ज़्यादातर साधक इसलिए नहीं देख पाते क्योंकी वे देखने का हठ करते है, जो एक मोहभाव है। इसलिए, जब तक वह इसे छोड़ नहीं देता, वह नहीं देख पायेगा। यह अधिकतर कर्म के बाधा डालने, अनुचित वातावरण, या व्यक्ति के साधना करने के तरीके के कारण होता है। बहुत से कारण हैं, जो हर एक व्यक्ति के लिए अलग अलग हैं। जो व्यक्ति देख सकता है वह भी हो सकता है स्पष्ट न देख सके, क्योंकी स्पष्ट न देख पाने से ही व्यक्ति को ताओ की ज्ञानप्राप्ति हो सकती है। जब कोई व्यक्ति सब कुछ स्पष्ट देख सके, जैसे वह स्वयं उस घटनास्थल पर हो, उसे 'गोंग के खुलने' (काइगोंग) की प्राप्ति हो गई है और वह आगे साधना अभ्यास नहीं कर सकता क्योंकि उसके पास ज्ञानप्राप्त करने के लिए कुछ नहीं बचा।

ली होंगज़ी
जून 16, 1995

(7) फा को सीखना

दाफा को सीखते समय, बुद्धिजीवियों को एक सबसे मुख्य समस्या से अवगत होना होगा : वे दाफा का अध्ययन उसी तरह करते है जैसे साधारण लोग सैधांतिक लेखनों [8]का अध्ययन करते हैं, जैसे अपने व्यवहार को परखने के लिए प्रसिद्ध लोगों के प्रासंगिक उद्धरण चुनना। यह साधक की उन्नति में बाधा डालेगा। और आगे, यह जान कर कि दाफा में अथाह, आतंरिक अर्थ और उच्च स्तर की बातें है जो विभिन्न स्तरों पर साधना अभ्यास का मार्गदर्शन कर सकते हैं, कुछ लोग इसका शब्द दर शब्द जांच करने का भी प्रयास करते है, पर अंत में उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होता। ऐसी आदतें, जो लम्बे समय से राजनैतिक सिधान्तों के अध्ययन से बन जाती है, ये भी साधना अभ्यास में बाधा डालने का कारक बनती हैं; इनसे फा की अनुचित समझ हो सकती है।

फा को सीखते समय, आपको किसी समस्या विशेष का समाधान पाने के लिए, प्रासंगिक हिस्सों की खोज नहीं करनी चाहिए। वास्तव में, यह (उन समस्याओं को छोड़कर जिनका तुरंत समाधान करना आवश्यक हो) भी एक मोहभाव है। दाफा की अच्छी समझ प्राप्त करने के लिए केवल यही मार्ग है कि इसका अध्ययन बिना किसी उद्देश्य से किया जाए। हर बार जब आप ज़ुआन फालुन को पढ़ कर समाप्त करते हैं, यदि आपने कुछ भी समझ प्राप्त की है तो आप उन्नति पर हैं। यदि इसे पढने के बाद आपको एक भी बात समझ आ गयी, तो आपने वास्तव में प्रगति की है।

वास्तव में, साधना अभ्यास में आपकी उन्नति स्वयं में सुधार करते हुए क्रमबद्ध और अनजाने में होती हैं। याद रखें: व्यक्ति को प्राप्ति सहज रूप से होनी चाहिए न कि हठ द्वारा।

ली होंगज़ी
सितम्बर 9, 1995

(8) सहायता कैसे प्रदान करें

विभिन्न क्षेत्रों के बहुत से सहायक दाफा की बहुत ऊँचे स्तर की समझ रखते है। अपने आचरण से वे एक अच्छा उदाहरण स्थापित कर रहे है और अपने अभ्यास दलों के आयोजन का काम अच्छी तरह निभा रहे है। हालाकि कुछ ऐसे भी सहायक है जिनका प्रदर्शन उतना अच्छा नहीं रहा है, और यह विशेष रूप से उनके काम करने के तरीकों से प्रकट होता है। उदहारण के लिए, शिष्यों से अपनी बात मनवाने के लिए और अपना काम सरल करने के लिए, कुछ सहायक अपना काम आदेश पत्र जारी कर के करते हैं। इसकी अनुमति नहीं है। फा को सीखना स्वयं की इच्छा से होना चाहिए। यदि कोई शिष्य अपने ह्रदय की गहराई से ऐसा नहीं करना चाहता, तो कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती। उसकी जगह, तनाव पैदा हो सकता है। यदि इसे नहीं सुधारा गया तो तनाव बढ़ सकता है, जिससे लोगों के लिए फा की शिक्षा प्राप्त करने में रूकावट आ सकती है।

इससे भी गंभीर बात, कुछ सहायक, अभ्यासियों द्वारा उन पर विश्वास कराने और अपनी बातें मनवाने के लिए, कई बार कुछ अफवाहें या कुछ सनसनीखेज़ बाते फैलाते है जिससे उनकी प्रतिष्ठा बढ़ सके, या दिखावा करने के लिए वे कुछ अनोखी चीज़ें करते है। इन सब की अनुमति नहीं है। हमारे सहायक स्वेच्छा से दूसरों की सेवा करते है; वे गुरु नहीं है, न ही उन्हें ऐसे मोहभाव रखने चाहिए।

फिर हम कैसे सहायक का काम अच्छी तरह करें? पहली बात, आप स्वयं को दूसरे शिष्यों में से ही एक समझें न की उनसे ऊँचा। यदि कोई ऐसी बात है जो आप को अपने काम में समझ नहीं आती, तो विनम्रता से आपको औरों के साथ चर्चा करनी चाहिए। यदि आप से कोई गलती हो जाये, तो आपको निष्ठापूर्वक शिष्यों से कहना चाहिए "आप की तरह मैं भी एक साधक हूँ, तो यह सम्भव है कि मुझसे अपने काम में गलती हो जाए। अब जब मुझसे गलती हो गई है, तो आइये हम वह करें जो सही है।" यदि आप निष्ठापूर्वक चाहते है कि सभी साधक मिलजुल कर काम पूरा करें, तो इसका क्या परिणाम होगा? कोई नहीं कहेगा की आप किसी काम के नहीं हैं। बल्कि, वे सोचेंगे कि आप ने फा को अच्छी तरह समझा है और आप खुले विचारों वाले है। वास्तव में, दाफा यहाँ है और सभी इसका अध्ययन कर रहे है। शिष्य सहायक द्वारा की गई प्रत्येक गतिविधि का आंकलन दाफा के अनुसार करते हैं, और यह अच्छा है या बुरा इसका अंतर स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है। यदि आप का उद्देश्य अपनी छवि बनाने का है, तो शिष्य सोचेंगे की आप के शिनशिंग[10] की कुछ समस्या है। इसलिए, केवल विनम्र होने से ही आप अच्छी तरह से काम कर सकेंगे। आप की प्रतिष्ठा फा की अच्छी समझ के आधार पर बनती है। कोई साधक त्रुटियों से मुक्त कैसे हो सकता है?

ली होंगज़ी
सितम्बर 10, 1995

(9) आकाश

ब्रहमांड का विस्तार और खगोल पिंडों की विशालता को मनुष्य खोज द्वारा कभी नहीं समझ सकते; पदार्थ की सूक्ष्मता का मनुष्य कभी पता नहीं लगा सकते। मनुष्य का शरीर इतना रहस्यमय है कि यह मनुष्य के ज्ञान की सीमा से परे है, जो केवल सतही स्तर पर समझ सकता है। जीवन इतना परिपूर्ण और जटिल है कि वह मनुष्यजाति के लिए सदैव एक अनसुलझा रहस्य बना रहेगा।

ली होंगज़ी
सितम्बर 24, 1995

(10) लोक

ईर्ष्या एक दुष्ट व्यक्ति को जन्म देती है।

स्वार्थ और क्रोध से भरा वह अपने प्रति अन्याय का दुःख व्यक्त करता है।

एक दयालु व्यक्ति का हृदय सदा करुणामय होता है।

न कोई असंतोष न कोई घृणा, वह कष्ट को आनंद से अपनाता है।

एक ज्ञानप्राप्त व्यक्ति में कोई मोहभाव नहीं होता।

वह शांतभाव से भ्रम में विलीन जगत के लोगों को देखता रहता है।

ली होंगज़ी
सितम्बर 25, 1995

(11) रिक्तता क्या है?

रिक्तता क्या है? मोहभाव से मुक्त होना यही रिक्तता की सच्ची अवस्था है। इसका अर्थ पदार्थ से रिक्त होना नहीं है। ज़ेन बुद्धमत अपने धर्म की अंतिम अवधि तक पहुँच चुका है, तथापि, उसमें सिखाने के लिए कुछ नहीं बचा है। इस अराजक धर्म विनाश काल में, जो लोग इसे सीखते है वे अब भी हठपूर्वक इसके रिक्तवाद के सिद्धान्त को जकड़े हुए हैं, अविवेकी और बेतुका भाव दर्शाते हुए, जैसे कि उन्हें इसके मूल सिद्धांत का ज्ञानोदय हो गया हो। इसके संस्थापक, बोधिधर्म ने स्वयं यह स्वीकार किया था कि उनका धर्म छः पीढ़ियों तक ही प्रभावी रहेगा, और उसके पश्चात आगे हस्तांतरण के लिए कुछ नहीं रहेगा। इससे जागृत क्यों नहीं होते? यदि कोई कहता है कि सब कुछ रिक्त है, न कोई फा है, न बुद्ध, न छवि, न स्वयं, और न कोई अस्तित्व, फिर बोधिधर्म क्या है? यदि कोई धर्म नहीं है, तो ज़ेन बुद्धमत की रिक्तता का सिद्धान्त क्या है? यदि कोई बुद्ध नहीं है, कोई छवि नहीं, तो शाक्यमुनि कौन हैं? यदि कोई नाम नहीं है, कोई छवि नहीं, कोई स्वयं नहीं, कोई अस्तित्व नहीं, और सब कुछ रिक्त है, तो फिर आप खाने पीने का कष्ट क्यों करते हो? आप कपड़े क्यों पहनते हो? आप की आँखें नोचकर निकाल ली जाएँ तो? आप के सांसारिक व्यक्ति की सात भावनाएं और छः आकांक्षाये किससे जुडी हैं? वास्तव में, तथागत के अनुसार 'रिक्तता' का अर्थ है सभी साधारण मानवीय मोह भाव से मुक्त होना। त्रुटिहीन होना, सही अर्थ में रिक्तता का मूल तत्व है। मूल रूप से, विश्व का अस्तित्व पदार्थ के कारण है और यह पदार्थ से निर्मित है और सदैव रहेगा। यह रिक्त कैसे हो सकता है? जो शिक्षा तथागत ने नहीं दी वह कभी ज्यादा दिन स्थायी नहीं रह सकती और ऐसी शिक्षाएं नष्ट हो जाती हैं—एक अरहत की शिक्षा बुद्ध फा नहीं हो सकती—इस बात से जागृत हो जाओ। इससे जागृत हो जाओ!

ली होंगज़ी
सितम्बर 28, 1995

(12) दृढ़ता

गुरु के यहाँ होने पर, आप में बहुत आत्मविश्वास रहता है। गुरु की अनुपस्थिति में, आपको साधना में कोई रुचि नहीं रहती, जैसे आप अपनी साधना केवल गुरु के लिए करते हो और आपने यह मार्ग कोई शौक पूरा करने के लिए अपनाया हो। यह एक साधारण व्यक्ति की मुख्य दुर्बलता है। शाक्यमुनि, जीसस, लाओ ज़[14] और कन्फ़्युशिअस को गए हुए दो हज़ार वर्ष से अधिक हो गए, फिर भी उनके शिष्यों ने कभी नहीं सोचा कि वे उनके गुरुओं के बिना साधना नहीं कर सकते। साधना आप का अपना कार्य है, और कोई दूसरा इसे आप के लिए नहीं कर सकता। गुरु केवल सतही रूप से नियम और सिद्धान्त बता सकते है। यह स्वयं आपका उत्तरदायित्व है कि आप अपने हृदय और मन का संवर्धन करें, अपनी इच्छाएं छोड़ें, ज्ञान प्राप्त करें और भ्रम दूर करें। यदि आप यह मार्ग किसी रूचि से अपना रहे हैं, तो निश्चित ही आपका मन स्थिर नहीं रहेगा और इस मानव समाज में रहते हुए निश्चित ही आप मूल नियम भूल जायेंगे। यदि आप दृढ़ता से अपने विश्वास पर कायम नहीं रहते हैं तो आपको कुछ प्राप्त नहीं होगा। कोई नहीं जानता कि अगला अवसर फिर कब आयेगा। यह बहुत कठिन है!

ली होंगज़ी
ऑक्टोबर 6, 1995

(13) बुद्धमत की शिक्षाएं बुद्ध फा का सबसे अशक्त और संक्षिप्त अंश है

सभी चेतन प्राणियों! सत्य - करुणा - सहनशीलता के दाफा का आंकलन कभी बुद्धमत से नहीं करना, क्योंकि यह असीमित है। लोग बुद्धमत के शास्त्रों को फा के नाम से जानने के अभ्यस्त हो गए है। वास्तव में, खगोल पिंड इतने विशाल है कि वे बुद्ध के ब्रह्माण्ड की धारणा से बहुत आगे है। ताओ विचारधारा के ताईजी[15] सिद्धान्त की ब्रह्माण्ड की समझ भी निम्न स्तर की है। साधारण मनुष्यों के स्तर पर वास्तव में कोई फा नहीं है, बल्कि विश्व की सतह पर छिटकी कुछ घटनाएँ है जो व्यक्ति को साधना अभ्यास करने के योग्य बना सकती है। क्योंकि साधारण लोग सबसे निम्न स्तर के जीव है, उन्हें बुद्ध फा की वास्तविकता जानने की अनुमति नहीं है। किन्तु, लोगों ने संतों से सुना है : बुद्ध की आराधना करने से साधना अभ्यास के अवसर के कारणीय बीज बोये जा सकते है; जो साधक मन्त्र का जाप करते हैं उन्हें उच्च प्राणियों से रक्षा मिल सकती है; उपदेशों का पालन करने से साधक के स्तर तक पहुँचा जा सकता है। इतिहास के आरम्भ से, लोग यही अध्ययन करते आ रहे हैं कि क्या जो ज्ञानप्राप्त व्यक्ति ने सिखाया वह वास्तव में बुद्ध फा ही है। तथागत की शिक्षा बुद्ध-स्वभाव की अभिव्यक्ति है, और उसे फा की अभिव्यक्ति भी कहा जा सकता है। परंतु यह विश्व का सच्चा फा नहीं है, क्योंकि अतीत के लोगों को बुद्ध फा की वास्तविक अभिव्यक्ति को समझना पूर्ण रूप से निषेध था। बुद्ध फा का ज्ञान केवल वही प्राप्त कर सकता था जो साधना अभ्यास द्वारा उच्च स्तर पर पहुँच चुका हो, इसलिए यह और भी उचित था कि लोगों को साधना अभ्यास का सच्चा सार समझने की अनुमति नहीं थी। फालुन दाफा ने आज तक के इतिहास में पहली बार मानवजाति को विश्व की मूल प्रकृति—बुद्ध फा—प्रदान किया है; यह उन्हें स्वर्ग तक पहुँचने की सीढ़ी प्रदान करने के समान है। तब आप विश्व के दाफा का आंकलन उससे कैसे कर सकते हैं जो कभी बुद्धमत में सिखाया गया था?

ली होंगज़ी
ऑक्टोबर 8, 1995

(14) प्रज्ञा क्या है?

प्रज्ञा क्या है? लोग समझते हैं की प्रसिद्ध व्यक्ति, विद्वान, और मानव समाज में अनेकों प्रकार के विशेषज्ञ बहुत महान है। वास्तव में, वे बहुत ही महत्वहीन है, क्योंकी वे साधारण व्यक्ति है। उनका ज्ञान केवल मानव समाज के आधुनिक विज्ञान की थोड़ी सी समझ तक ही सीमित है। इस अतिव्यापक ब्रह्माण्ड में, अति विशाल से लेकर अति सूक्ष्म तक, मानव समाज बिलकुल मध्य में, सबसे बाहरी परत में और सबसे बाहरी सतह पर स्थित है। और, इसके प्राणी अस्तित्व के सबसे निम्म स्वरुप है, इसलिए उनकी पदार्थ और मन की समझ बहुत ही सीमित, सतही और दयनीय है। यदि कोई मानवजाति का सारा ही ज्ञान क्यों न प्राप्त कर लें, वह तब भी एक साधारण व्यक्ति ही रहेगा।

ली होंगज़ी
ऑक्टोबर 9, 1995

(15) यह साधना अभ्यास है, कोई पेशा नहीं

क्या आप मेरी सहायक केन्द्रों के लिए स्थापित आवश्यकताओं का पालन कर पाते हैं यह एक बहुत महत्वपूर्ण नियम की बात है, और इसका प्रभाव भविष्य में फा के प्रसार पर होगा। लम्बे समय से नौकरशाही दफ्तरों में रहते हुए आपने जो दिनचर्या बना ली है उन्हें छोड़ क्यों नहीं देते? सहायक केन्द्रों को मानव समाज के प्रशासनिक कार्यालयों की तरह मत बनाओ और उनकी पद्धतियां और रास्ते मत अपनाओ, जैसे दस्तावेज जारी करना, नीति लागू करने की कार्यवाही, या "लोगों की समझ में वृद्धि करना"। एक दाफा के साधक को साधना में केवल अपने शिनशिंग में सुधार करना चाहिए, और अपने प्राप्ति के पद और स्तर को ऊँचा उठाना चाहिए। कई बार तो बैठकें भी साधारण लोगों के कार्यस्थलों के अनुरूप आयोजित की जाती है। उदहारण के लिए, वहां कोई अधिकारी भाषण देगा या कोई नेता भाषण का सारांश प्रस्तुत करेगा। आज कल, सरकार भी समाज में ऐसी भ्रष्ट प्रथाओं और नौकरशाही प्रक्रियाओं को सुधारने का प्रयास कर रही है। एक साधक होते हुए, आप जानते है की धर्म विनाश काल में मानवजाति के सभी पक्ष उतने अच्छे नहीं रह गए है। आप उन काम करने के तरीकों को छोड़ क्यों नहीं देते जो साधना अभ्यास के लिए बिलकुल उचित नहीं है? हम कभी भी इसे समाज में किसी प्रशासनिक संस्था या उद्यम में परिवर्तित नहीं करेंगे।

पहले, कुछ सेवानिवृत लोग, जिनके पास करने को कुछ नहीं था, को फालुन दाफा में अच्छाई दिखाई दी तो अपने आरामदेह जीवन के खालीपन मिटाने के लिए उन्होनें सहायता करने का प्रस्ताव रखा। यह कदापि उचित नहीं होगा! फालुन दाफा एक साधना अभ्यास है—कोई पेशा नहीं। हमारे सभी स्वयंसेवक कार्यकर्ता पहले तो उच्च शिनशिंग स्तर वाले सच्चे साधक होने चाहिए, क्योंकि वे शिनशिंग की साधना के प्रेरणास्रोत हैं। हमें ऐसे नेताओं की आवश्यकता नहीं है जैसे साधारण लोगों में पाए जाते है।

ली होंगज़ी
ऑक्टोबर 12, 1995

(16) सेवा निवृति के प्रश्चात साधना अभ्यास

यह बड़े दुःख की बात है की कुछ शिष्य जिन्होंने मेरे व्याख्यान सुने और जिनके जन्मजात गुण अच्छे है उन्होंने साधना अभ्यास करना छोड़ दिया है क्योंकि वे अपने काम में व्यस्त है। यदि वे कोई औसत, साधारण लोग होते, तो मै कुछ नहीं कहता और उन्हें अपने आप पर छोड़ देता। किन्तु इन लोगों से अब भी कुछ आशा शेष है। मानव नैतिकता तेजी से प्रति दिन गिरती जा रही है, और साधारण लोग सभी उस बहाव में बहते चले जा रहे है। ताओ से जितने दूर होते जायेंगे, उतना ही साधना के द्वारा लौटना कठिन होगा। वास्तव में, साधना अभ्यास का सन्दर्भ अपने हृदय और मन की साधना से है। विशेष रूप से, कार्यस्थल का जटिल वातावरण, आपके शिनशिंग की उन्नति के लिए आपको एक अच्छा अवसर प्रदान करता है। सेवा निवृति के बाद, क्या आप साधना के अभ्यास का एक श्रेष्ठ वातावरण खो नहीं देंगे? बिना किसी कठिनाइयों के आप कैसे साधना करेंगे? आप कैसे स्वयं में सुधार लायेंगे? जीवन तो सीमित है। कई बार आप योजनायें अच्छी तरह बनाते है, पर क्या आप जानते है कि आपके पास अपनी साधना के लिए पर्याप्त समय शेष रहेगा? साधना अभ्यास कोई बच्चों का खेल नहीं है। यह साधारण लोगों के किसी भी कार्य से अधिक गंभीर है—इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। एक बार आप ने अवसर खो दिया, तो आपको दोबारा इस छः परतों के जन्म मरण के क्रम में एक मानव शरीर प्राप्त करने का अवसर कब मिलेगा? अवसर केवल एक बार दस्तक देता है। एक बार भ्रम जाल जिससे आप छूटना नहीं चाहते, के ओझल होने पर, आप को एहसास होगा की आप ने क्या खोया है।

ली होंगज़ी
ऑक्टोबर 13, 1995

(17) जब फा सही होगा

जब लोगों में सदगुण नहीं हो, तो प्राकृतिक आपदाएं और मनुष्य निर्मित प्रलय बहुतायात में होंगे। जब पृथ्वी में सदगुण नहीं हो, तो सब कुछ तितर बितर हो जायेगा। जब स्वर्ग ताओ से भटक जाता है, तब धरती फट जाएगी, अम्बर गिर जायेगा, और सारा ब्रह्माण्ड रिक्त हो जायेगा। जब फा सही होगा, तब ब्रह्माण्ड भी सही होगा। जीवन विकसित होगा, स्वर्ग और धरती स्थिर होंगे, और फा का अस्तित्व सदा बना रहेगा।

ली होंगज़ी
नवंबर 12, 1995

(18) ऋषि

वे इस जगत में और उपर स्वर्ग में एक दैवकृत प्रयोजन से आये है। उनमें प्रचूर सदगुण भरा है और उनका हृदय करुणामयी रहता है; छोटी छोटी बातों पर ध्यान देने के साथ वे महान आकांक्षाओं का भंडार है। नियमों और सिद्धान्तों के प्रशस्त ज्ञान के साथ, वे अनिश्चितताओ को सुलझा सकते है। इस जगत और इसके लोगों को मुक्ति का पथ प्रदान करते हुए, वे अपनी योग्यता स्वयं स्थापित करते है।

ली होंगज़ी
नवंबर 17, 1995

(19) एक स्पष्ट स्मरण पत्र

इस समय एक मुख्य समस्या है : जब कुछ शिष्यों की मूल आत्मा उनके शरीर को छोड़ कर जाती है, तब वे किसी स्तर पर कुछ आयाम देख या उनसे संपर्क करते है। यह अनुभव उन्हें बहुत अद्भुत लगता है और सबकुछ बिलकुल वास्तविक जान पड़ता है, इसलिए वे लौटना नहीं चाहते। परिणामस्वरुप उनके भौतिक शरीर की मृत्यु हो जाती है। इसलिए वे उसी लोक में रह जाते हैं और लौट कर नहीं आ पाते। किन्तु उनमे से कोई भी 'तीन लोक' के आगे नहीं पहुँच सका था। मैंने पहले भी इस समस्या के बारे में बताया है। अपनी साधना में किसी भी आयाम से मोह मत रखो। जब आपका पूरा साधनाक्रम सम्पूर्ण हो जायेगा तभी आप परिपूर्णता प्राप्त कर सकेंगे। इसलिए जब आपकी मूल आत्मा बाहर जाती है, आपको वे स्थान कितने भी अद्भुत क्यों न लगें, आपको लौट आना चाहिए।

हमारे कुछ शिष्यों को एक भ्रान्ति भी है। वे सोचते है की एक बार फालुन दाफा का साधना अभ्यास करने पर, उन्हें यह आश्वासन मिल जाता है कि उनके भौतिक शरीर की कभी मृत्यु नहीं होगी। हमारा साधना अभ्यास मन और शरीर दोनों की साधना करता है; एक साधक अपनी आयु तब तक बढ़ा सकता है जब तक वह साधना करता रहेगा। किन्तु कुछ लोगों ने त्रिलोक-फा साधना में प्रगति के कोई यत्न नहीं किये है, और वे किसी एक ही स्तर पर ठहरे रहते हैं। बहुत अधिक प्रयास के बाद अगले स्तर पर पहुँचने पर, वे फिर उस स्तर पर भी ठहरे रहते हैं। साधना अभ्यास एक गंभीर विषय है, इसलिए यह आश्वासन देना कठिन है कि आपका जीवन पूर्वनिर्धारित समय पर समाप्त नहीं होगा। हालांकि यह समस्या पर-त्रिलोक-फा साधना अभ्यास में नहीं होती है। किन्तु, पर-त्रिलोक-फा में परिस्थिति अधिक उलझन वाली होती है।

ली होंगज़ी
दिसम्बर 21, 1995

(20) आप साधना अभ्यास किसके लिए करते हैं?

जब कुछ लोग मीडिया का आश्रय लेकर चीगोंग की निंदा करते है, तब कुछ अभ्यासियों का दृढ़ संकल्प डगमगाने लगता है और वे साधना अभ्यास छोड़ देते हैं; ऐसा लगता है कि जो मीडिया का लाभ उठाते हैं वे बुद्ध फा से अधिक ज्ञानपूर्ण है, और यह कि कुछ साधक अन्य लोगों के लिए साधना करते है। कुछ ऐसे भी लोग है जो दबाव की स्थिति उत्पन्न होने पर डर जाते है और साधना अभ्यास छोड़ देते है। क्या इस प्रकार के लोगों को उचित पदवी की प्राप्ति हो सकती है? निर्णायक स्तिथि में, क्या वे बुद्ध से भी विश्वासघात नहीं कर लेंगे? क्या भय एक मोहभाव नहीं है? साधना अभ्यास विशाल लहरों की तरह है जो रेत को छान कर अलग कर देती है : जो शेष रह जाता है वह सोना होता है।

वास्तव में, प्राचीन काल से लेकर आज तक, मानवीय समाज में एक नियम रहा है जिसे परस्पर-जनन और परस्पर-अवरोध कहते है। इसलिए जहां अच्छाई है, वहां बुराई है; जहां पवित्रता है, वहां अमंगल है; जहाँ दयाभाव है, वहां दुष्टता है; जहाँ मानव हैं, वहां प्रेत हैं; जहाँ बुद्धजन हैं, वहां दानव हैं। यह मानवीय समाज में और अधिक लागू होता है। जहां सकारात्मक है, वहां नकारात्मक है; जहां पक्ष है, वहां विपक्ष है; जहां श्रद्धालु हैं, वहां नास्तिक हैं; जहां अच्छे लोग हैं, वहां बुरे लोग हैं; जहां निस्वार्थी लोग है, वहां स्वार्थी लोग हैं; और जहां

ऐसे लोग है जो दूसरों के लिए बलिदान देते हैं, तो ऐसे भी लोग है जो अपने लाभ के लिए कुछ भी करने से नहीं रुकते। यह पुराने समय का नियम था। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति, कोई समूह, या कोई राष्ट्र, कुछ अच्छा करना चाहता है, तो उसके विरुद्ध उतना ही विरोध खड़ा हो जायेगा। सफलता पाने पर, आपको यह अनुभव होगा कि यह कितनी कठिनाई से प्राप्त हुआ है और इसे संजो कर रखना चाहिए। मानवजाति का विकास इसी प्रकार हुआ है (भविष्य में परस्पर-जनन और परस्पर-अवरोध का नियम बदल जायेगा)।

इसे दूसरी तरह से देखें तो, साधना अभ्यास अलौकिक है। चाहे जो भी व्यक्ति हो, क्या उसका चीगोंग की निंदा करना एक साधारण मनुष्य के दृष्टिकोण से नहीं है? क्या उसे बुद्ध फा और साधना को नकारने का कोई भी अधिकार है? क्या मनुष्यजाति की कोई भी संस्थाएं भगवन और बुद्ध से उपर उठ सकती है? क्या जो चीगोंग की निंदा करते हैं उनमें यह क्षमता है कि वे बुद्धजनों को आदेश दे सकें? क्या उनके कहने से बुद्ध बुरे बन जायेंगे? उनके यह कहने से कि बुद्ध नहीं होते, क्या बुद्धजनों का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा? “महान सांस्कृतिक आन्दोलन” के समय धर्म के लिए आई विपत्ति, ब्रहमाण्ड की घटनाओं के क्रमागत बदलाव का परिणाम थी। बुद्ध, दाओ और देव सभी स्वर्ग की इच्छा का अनुसरण करते है। धर्म की विपत्ति मनुष्यों और धर्मों के लिए विपत्ति थी, न कि बुद्ध के लिए विपत्ति।

धर्मों के प्रति मान कम होने का सबसे बड़ा कारण मनुष्य के मन का भ्रष्ट होना है। लोग बुद्ध की पूजा बुद्ध की साधना के लिए नहीं, बल्कि बुद्ध से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए करते हैं, जिससे वे धन कमा सकें, विपरीत परिस्थितियों को हटा सकें, बेटा पा सकें, या फिर एक सुखद जीवन व्यतीत कर सकें। सभी ने अपने पिछले जन्मों में बहुत सा कर्म एकत्रित किया हुआ है। तो व्यक्ति सुखद जीवन कैसे व्यतीत कर सकता है? यह कैसे हो सकता है कि व्यक्ति बुरे कर्म करने के बाद उसका भुगतान न करे? जब असुरों ने देखा कि मनुष्य का मन पवित्र नहीं है, तो वे एक के पीछे एक अपनी गुफाओं से मानवीय दुनिया में क्लेश और अव्यवस्था फैलाने निकल आये हैं। जब देवताओं ने और बुद्धजनों ने देखा कि मनुष्य का मन पवित्र नहीं है, तो उन्होंने अपने पद त्याग दिए और एक के बाद एक मंदिर छोड़ दिए। बहुत से भेडिये, नेवले, प्रेत और सांप मंदिरों में उन लोगों द्वारा लाये गए जो धन और लाभ के लिए प्रार्थना करने आते है। ऐसे मंदिरों में विपत्तियां क्यों नहीं आएगीं? मनुष्यों ने पाप किया है। बुद्ध लोगों को दंड नहीं देते, क्योंकि लोग भ्रमजाल में जी रहे हैं और स्वयं अपने आपको हानि पहुंचा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, उन्होने अपने लिए बड़ी मात्रा में कर्म एकत्रित कर लिया है, और महान आपदाएं जल्द ही उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं। क्या फिर भी उन्हें दंड देना आवश्यक होगा? वास्तव में, यदि कोई व्यक्ति कोई अनुचित काम करता है, तो उसे भविष्य में कभी न कभी उसका दंड भुगतना पड़ता है। बस यही बात है की लोगों को इसकी समझ या इस पर विश्वास नहीं होता; उन्हें लगता है कि दुर्घटनाएँ आकस्मिक होती हैं।

इस बात की परवाह किये बिना कि कौनसी और कैसी सामाजिक शक्तियां आप को साधना अभ्यास से रोकती हैं, आप साधना अभ्यास छोड़ देते हैं। क्या आप उनके लिए साधना अभ्यास करते हैं? क्या वे आपको उचित पदवी तक पहुँचाएँगे? क्या आपका उनकी ओर झुकाव अन्धविश्वास नहीं है? वास्तव में यही असली अज्ञान है। इसके अतिरिक्त, हम कोई चीगोंग साधना नहीं कर रहे हैं, हम बुद्ध फा का साधना अभ्यास कर रहे हैं। क्या किसी प्रकार का दबाव इस बात की एक परीक्षा नहीं है कि आप का बुद्ध फा में विश्वास मूलरूप से कितना दृढ हैं। यदि आप अब भी मूल रूप से फा में दृढ नहीं हैं, तो बाकी सब कुछ व्यर्थ है।

ली होंगज़ी
दिसम्बर 21,1995

(21) बुद्ध फा की शब्दावली

कुछ शिष्य पहले बुद्ध धर्म का पालन करते थे और बुद्ध शास्त्रों में उपयोग की गयी शब्दावली का उन पर बहुत गहरा प्रभाव रहा है। जब वे मेरे उपयोग किये गए शब्दों को बुद्धमत के शब्दों के समान पाते हैं, तो वे समझते है कि उनके अर्थ वही हैं जो बुद्धमत में हैं। वास्तव में, उनका अर्थ पूरी तरह से समान नहीं है। हान क्षेत्र के बुद्धमत के कुछ शब्द चीनी शब्दावली बन चुके हैं, और वे केवल बुद्धमत के शब्द नहीं हैं।

मूलतत्व यह है कि ये शिष्य बुद्धमत की वस्तुओं को छोड़ नहीं पा रहे हैं, क्योंकि उन्हें इस बात का एहसास नहीं है की बुद्धमत की धारणा अब भी उनके मन को प्रभावित कर रही है, और न ही वे इस बात की पर्याप्त समझ रखते है कि केवल एक ही साधना मार्ग का अभ्यास करना चाहिए। यदि आप मेरे शब्दों का कुछ और ही अर्थ लगाते हैं, तो क्या आप बुद्धमत की साधना नहीं कर रहे?

ली होंगज़ी
दिसम्बर 21, 1995

(22) आतंरिक साधना से बाह्य शांत करें

यदि लोग सदाचार का मूल्य नहीं समझेंगे, तो विश्व अस्तव्यस्त और बेकाबू हो जायेगा; हर कोई एक दूसरे का शत्रु बन जायेगा और बिना खुशी के जियेगा। बिना खुशी के जीने से, उन्हें मृत्यु से डर नहीं लगेगा। लाओ ज़ ने कहा है "जब लोग मृत्यु से नहीं डरेंगे, तो उन्हें मृत्यु से डराकर क्या फायदा? यह एक बहुत बड़ा, वास्तविक संकट है। लोग एक शांतिपूर्ण संसार की आशा रखते है। यदि इस समय सुरक्षा स्थापित करने के लिए अत्यधिक नियमों और आदेशों को लागू किया जाता है, तो इसका विपरीत प्रभाव होगा। इस समस्या को हल करने के लिए, विश्व में सदाचार बढ़ाना आवश्यक है—केवल इसी तरह इस समस्या का मूल रूप से समाधान किया जा सकता है। जब अधिकारी नि:स्वार्थी होंगे, तो राज्य भ्रष्ट नहीं होगा। यदि लोग स्वयं-साधना को महत्व देंगे और सदाचार का पालन करेंगे, और अधिकारी और जनता मिलकर अपने मन से आत्म-संयम अपनायेंगे, तो पूरा राष्ट्र स्थिर रहेगा और उसे जनता का सहयोग प्राप्त होगा। राष्ट्र स्थिर और शक्तिशाली होने से, सहज ही विदेशी शत्रु भय में रहेंगे, और इस प्रकार विश्व में शान्ति बनी रहेगी। यह एक ऋषि का कार्य है।

ली होंगज़ी
जनवरी 5, 1996

(23) मोहभावों से और छुटकारा

मेरे शिष्यों ! गुरु बहुत चिंतित हैं, पर इससे कोई लाभ नहीं होगा! आप क्यों साधारण मानव मोहभावों को त्याग नहीं सकते? आगे कदम बढ़ाने से आप इतना क्यों हिचकिचाते हैं? हमारे शिष्य, और साथ ही हमारे कर्मचारी, दाफा के काम में भी एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं। क्या आप इस तरह बुद्ध बन पाएंगे? मैं एक अनौपचारिक प्रशासन केवल इसलिए चाहता हूँ क्योंकि आप साधारण मानवीय बातें नहीं छोड़ पाते और इसलिए अपने काम में व्याकुल अनुभव करते हैं। दाफा का सम्बन्ध सारे ब्रह्माण्ड से है, न की केवल एक महत्वहीन व्यक्ति से। जो भी काम कर रहा है वह दाफा का प्रचार कर रहा है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि उसे आप करें या कोई और। क्या यह मोहभाव जिसे आप त्याग नहीं पाते, अपने साथ दिव्यलोक में ले जाओगे, और फिर बुद्ध से संघर्ष करोगे? किसी को भी दाफा को अपनी निजी संपत्ति नहीं मानना चाहिए। इस विचार को हटा दें कि आपके साथ कोई अन्याय हो रहा है! जब आपके मन से कोई बात नहीं हटती, तो क्या यह आपके मोहभाव से उत्पन्न नहीं हुई है? हमारे शिष्यों को यह नहीं सोचना चाहिए कि इसका उनसे कोई सम्बंध नहीं है! मैं यह आशा करता हूँ कि सभी स्वयं को जांचेंगे, क्योंकि मुझे, ली होंगज़ी के अतिरिक्त, आप सब साधक हैं। सभी यह सोचें : मैं इस अंतिम प्रलय के समय यह महान फा क्यों सिखा रहा हूँ? यदि मैं सच्चाई उजागर कर दूं, तो यह एक दुष्ट पद्धति को सिखाने जैसा होगा क्योंकि ऐसे लोग अवश्य होंगे जो इसी के लिए फा सीखना चाहते है। वह फा को किसी लक्ष्य से अध्ययन करना होगा। मुक्ति प्राप्त करने के लिए, केवल जब आप सच्चाई की इच्छा रखते हैं, तभी आपके मोहभाव हटाये जा सकते हैं। आप सब जानते हैं कि कोई भी व्यक्ति मोहभावों को छोड़े बिना साधना में सफल नहीं हो सकता। आप और अधिक त्याग करने का साहस करके आगे क्यों नहीं बढ़ते? वास्तव में, मेरे द्वारा इस दाफा की शिक्षा प्रदान करने का कोई अनकहा कारण अवश्य होगा। जब सच्चाई प्रकट होगी तब पछतावे के लिए बहुत देर हो चुकी होगी। मैंने आप में से कुछ के मोहभाव देखे हैं, पर मैं आपको सीधा नहीं बता सकता। यदि मैंने ऐसा किया, तो आप जीवन भर गुरु के शब्दों को मन में बिठाये रखोगे और आजीवन उनसे मोहभाव जोड़ लोगे। मुझे आशा है कि मेरे किसी भी शिष्य की बरबादी नहीं होगी। लोगों को बचाना बहुत ही कठिन है, और उन्हें ज्ञानोदय कराना और भी कठिन। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि हर कोई स्वयं की इस सम्बन्ध में जाँच करे। आप सब जानते हैं कि दाफा अच्छा है, तो फिर आप अपने मोहभाव क्यों नहीं छोड़ देते?

ली होंगज़ी
जनवरी 6, 1996

(24) पुष्टिकरण

बुद्ध फा मानवजाति को बचा सकता है, किन्तु बुद्ध फा का अस्तित्व मनुष्य के उद्धार के लिए नहीं हुआ है। बुद्ध फा ब्रह्माण्ड, जीवन और विज्ञान इन सभी के रहस्यों को सुलझा सकता है। यह मानवजाति को विज्ञान के क्षेत्र में सही पथ पर चलने का अवसर देता है, किन्तु बुद्ध फा का उद्भव मानवजाति के विज्ञान के मार्गदर्शन के लिए नहीं किया गया है। बुद्ध फा ब्रह्माण्ड की प्रकृति है। यह वह कारक है जिससे पदार्थ के मूल का निर्माण हुआ, और यह विश्व के आरम्भ का भी कारण है।

भविष्य में ऐसे कई विशेषज्ञ और विद्वान होंगे जिनका ज्ञान बुद्ध फा के माध्यम से विस्तृत होगा। वे मानवता की नयी पीढ़ी के लिए शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अग्रदूत होंगे। परंतु आप को अग्रदूत बनाने के लिए बुद्ध फा ने ज्ञान प्रदान नहीं किया है। आपको इसकी प्राप्ति इसलिए हुई है क्योंकि आप साधक हैं। अर्थात, पहले आप साधक हैं, फिर एक विशेषज्ञ। तब, एक साधक के रूप में, आपको दाफा का प्रचार करने के लिए सभी संभव परिस्थितियों का उपयोग करना चाहिए और दाफा का एक सच्चे और सही विज्ञान के रूप में पुष्टिकरण करना चाहिए, न कि उपदेश देना और आदर्शवादी बनना—यह सभी साधकों का कर्तव्य है। इस विशाल बुद्ध फा के बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं होगा—जिसमें यह सारा ब्रह्माण्ड, सूक्ष्तम से वृहत्तम तक सम्मिलित है, और साथ ही मानव समाज का सारा ज्ञान सम्मिलित है।

ली होंगज़ी
जनवरी 8, 1996

(25) एक साधक सहज ही इसका अंश है

एक साधक के लिए, सारी निराशा जिसका वह साधारण लोगों के बीच सामना करता है परिक्षण है, और सारी प्रशंसा जो वह प्राप्त करता है परिक्षायें है।

ली होंगज़ी
जनवरी 14,1996

(26) सहनशीलता (रेन) क्या है?

सहनशीलता व्यक्ति के शिनशिंग को सुधारने की कुंजी है। क्रोध, शिकायतों या आंसुओं के साथ सहन करना एक साधारण व्यक्ति की सहनशीलता है, जो अपनी चिंताओं के मोह में बंधा है। पूरी तरह बिना क्रोध या शिकायतों से सहन करना एक साधक की सहनशीलता है।

ली होंगज़ी
जनवारी 21, 1996

(27) मी-शिन (अन्धविश्वास) क्या है?

चीनी लोग आज इन दो अक्षरों "मी-शिन" के उल्लेख मात्र से फीके पड़ जाते है, क्योंकि बहुत से लोग जिस किसी बात पर विश्वास नहीं करते उसे मी-शिन कहते है। वास्तव में, इन दो अक्षरों, मी शिन को, महान सांस्कृतिक आन्दोलन के समय, अतिवादी 'वामपंथी' विचारधारा में लपेट दिया गया, और उन्हें उस समय राष्ट्रीय संस्कृति के विरुद्ध सबसे हानिकारक शब्द और सबसे घृणाजनक उल्लेख के लिए उपयोग किया गया। इस प्रकार यह उन सरल मन और अडियल लोगों के लिए सबसे गैर जिम्मेदाराना तकिया कलाम बन गया। यहाँ तक कि वे स्वयं घोषित, तथाकथित 'भौतिकवादी', वे भी हर बात जो उनकी समझ से परे हो या विज्ञान

की समझ से परे हो तो उसे मी शिन का नाम दे देते है। यदि ऐसे सिद्धान्तों के अनुसार बातों को समझा जाता, तो मनुष्यजाति कोई विकास नहीं कर पाती। और न ही विज्ञान आगे प्रगति कर पाता, क्योंकि विज्ञान की सभी नई प्रगतियां और खोजें उनके पूर्वजों की समझ से परे रही हैं। तब क्या ये लोग स्वयं आदर्शवादी नहीं बन रहे है? एक बार मनुष्य किसी बात में विश्वास कर लेता है, तो क्या यह अपने आप में एक निर्धारित समझ नहीं हुई? क्या यह सच नहीं कि लोगों का आधुनिक विज्ञान और आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र में विश्वास भी मी शिन है? क्या यह सच नहीं कि लोगों की अपने आदर्शो में श्रद्धा भी मी-शिन है? वास्तव में, मी शिन के दो अक्षरों से एक बहुत ही साधारण शब्द बनता है। एक बार लोग किसी बात में उत्साहित हो कर विश्वास कर लेते है—सत्य समेत—तो वह मी-शिन बन जाता है; यह कोई अपमानजनक अर्थ नही सूचित करता। केवल जब अनुचित प्रयोजन से वे लोग जो दूसरों पर वार करते है तब मी-शिन का सामंतवादी भावार्थ सामने आता है, और इस प्रकार यह एक भ्रामक और लड़ाकू अर्थ वाला शब्द बन गया है जो सरल मन वाले लोगों को इसे दोहराने के लिए उकसा सकता है।

दरअसल, इन दो शब्दों, मी-शिन, का प्रयोग इस प्रकार नहीं करना चाहिए और न ही इन पर थोपा हुआ अर्थ इस प्रकार होना चाहिए। ये दो शब्द मी और शिन ऐसा कुछ सूचित नहीं करते जो नकारात्मक हो। अनुशासन में मी-शिन के बिना, सैनिकों में मुकाबला करने की क्षमता नहीं रहेगी; अपने विद्यालयों और शिक्षकों में मी-शिन के बिना, छात्र शिक्षा नहीं पा सकेंगे; अपने माता-पिता में मी-शिन के बिना, बच्चों का पालन पोषण शिष्टाचार से नहीं होगा; अपने व्यवसाय में मी-शिन के बिना, लोग अपने कार्य में अच्छी तरह काम नहीं करेंगे। विश्वास के बिना, मनुष्यजाति में नैतिक आदर्श नहीं होंगे; मनुष्य के मन में अच्छे विचार नहीं रहेंगे और उनपर बुरे विचार हावी हो जाएंगे। उस समय मानव समाज के नैतिक मूल्यों में शीघ्रता से गिरावट आयेगी। दुष्ट विचारों के अधीन, सभी एक दुसरे के शत्रु बन जायेंगे और अपनी स्वार्थी इच्छाओं को पूरा करने के लिए कुछ भी करने से नही रुकेंगे। हालाँकि उन बुरे लोगों ने मी-शिन के इन दो शब्दों को नकारात्मक अर्थ दे कर अपना उद्देश्य प्राप्त कर लिया, उन्होंने संभवतः मानवजाति को उसकी प्रकृति से ही प्रारंभ करते हुए बर्बाद कर दिया।

ली होंगज़ी
जनवरी 22,1996 पुनर्संशोधित अगस्त 22,1996

(28) रोग कर्म

ऐसा क्यों है की एक नया अभ्यासी जिसने अभी अभ्यास करना प्रारंभ किया है, या फिर अनुभवी अभ्यासी जिसका शरीर व्यवस्थित किया जा चुका है, अपनी साधना में कुछ असहजता महसूस करते हैं जैसे वे गंभीर रूप से रोगी हों? और ऐसा कभी कभार क्यों होता है? अपने फा के व्याख्यानों में मैंने बताया है कि यह आपके कर्म को दूर करने और आपके ज्ञान प्राप्ति के गुण को सुधारने के लिए है, साथ ही आप के अनेक पूर्व जन्मों के कर्म भी दूर किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त, यह इसकी भी परीक्षा है कि आप दाफा का पालन करने में कितने दृढ है; यह तब तक जारी रहेगा, जब तक आपकी साधना पर-त्रिलोक-फा-सिद्धांत तक नहीं जाती। यह इसे साधारण शब्दों में समझाने जैसा है।

वास्तव में, एक व्यक्ति यह नही जानता की कितने जीवनकालों में—जिसमें से प्रत्येक में उसने बहुत से कर्म एकत्रित किये—से वह गुजर चुका है। जब किसी व्यक्ति का मृत्यु के बाद पुनर्जन्म होता है, उसका कुछ रोग-कर्म उसके शरीर में एक सूक्ष्म स्तर पर दबा दिया जाता है। जब उसका पुनर्जन्म होता है, उसके नये शरीर के पदार्थ में उपरी तौर पर कोई रोग-कर्म नही होता (किन्तु जिनका कर्म बहुत अधिक होता है वे अपवाद हो सकते हैं)। जो पूर्व जन्म में शरीर में दबाया गया था वह अब उभरकर आता है, और जब वह इस भौतिक शरीर के सतह पर लौटता है तो व्यक्ति बीमार पड़ जाता है। किन्तु बहुधा यह रोग इस भौतिक जगत में बाहय कारकों द्वारा उत्पन्न हुआ दिखाई पड़ता है। इस तरह से यह उपरी तौर पर हमारे भौतिक जगत के नियमों के अनुरूप होता है। अर्थात, यह इस मानवीय जगत के नियमों का पालन करता है। परिणाम स्वरुप, साधारण लोग किसी भी प्रकार रोग के कारण का वास्तविक सत्य नहीं जान पाते, और वे इस तरह बिना ज्ञानोदय हुए भ्रम में खोये रहते हैं। रोग होने पर, वह व्यक्ति औषधि लेगा या फिर अनेक प्रकार के उपचार तलाशेगा, जिससे वह रोग वापस शरीर में दब जाएगा। इस प्रकार, अपने पूर्वजन्मों के बुरे कार्यों से उत्पन्न रोग-कर्म का ऋण चुकाने के बजाय, वह इस जीवन में कुछ और बुरे कार्य करता है और दूसरों को दुःख पहुंचाता है; जिससे नए रोग-कर्म उत्पन्न होते हैं और फलस्वरूप अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते है। हालाकि, वह फिर औषधि का प्रयोग करके या कुछ और उपचार करके रोग को फिर से अपने शरीर में दबा देता है। शल्यचिकित्सा केवल इस सतही भौतिक आयाम के मांस को हटा सकती है, जबकी दूसरे आयाम के रोग-कर्म को छुआ भी नही जा सकता—यह इस आधुनिक चिकित्सा तकनीक की पहुंच से परे है। जब रोग वापस लौटता है, व्यक्ति फिर से उपचार ढूंढेगा। मृत्यु के पश्चात जब व्यक्ति पुनर्जन्म लेता है, जो भी रोग-कर्म एकत्रित होता है वह वापस उसके शरीर में दबा दिया जाता है। यह चक्र जीवन दर जीवन चलता रहता है; व्यक्ति के शरीर में कितने रोग-कर्म एकत्रित है इसका किसी को ज्ञान नहीं है। इसलिए मैने यह कहा है की आज की संपूर्ण मानवजाति इस बिंदू पर पहूंच गयी है जहाँ उसने कर्म के उपर कर्म एकत्रित किये है; रोग-कर्म के अलावा, व्यक्ति के पास दूसरे प्रकार के कर्म भी होते हैं। इसीलिए लोगों के जीवन में कठिनाइयाँ, क्लेश और चिंता होते हैं। कर्म का भुगतान किये बिना वे केवल प्रसन्नता की अपेक्षा कैसे कर सकते है? आज कल लोगों के कर्म इतने अधिक है कि वे इनमें डूबे हुए है, और किसी भी समय या स्थिति में उनका सामना अप्रिय परिस्थितियों से हो सकता है। जैसे ही वह व्यक्ति अपने कदम द्वार के बाहर रखता है, बुरी परिस्थितियां उसकी प्रतीक्षा कर रही है। जब कोई मतभेद होते हैं, लोग उन्हें सहन नहीं कर पाते और यह समझने में विफल रहते हैं की वे अपने विगत के कर्मों का भुगतान कर रहे हैं। यदि किसी व्यक्ति से लोग बुरा व्यवहार करते हैं, तो वह उनसे और भी बुरा व्यवहार करेगा, जिससे वह पुराने कर्म का भुगतान करने से पहले नया कर्म उत्पन्न कर लेगा। इससे समाज की नैतिक मूल्यों में प्रतिदिन गिरावट आती है, और सभी एक दुसरे के शत्रु बन जाते है। बहुत से लोग यह नहीं समझ पाते : आज के लोगों को क्या हो गया है? आज कल के समाज में यह क्या हो रहा है? यदि मानवजाति इसी प्रकार बनी रही तो यह अंत्यत भयावह होगा !

हम साधकों के लिये, गुरूजी द्वारा हटाये गये कर्म के अलावा, कुछ भाग हमें स्वयं भुगतना होगा। इसलिए आपको शारीरीक तौर पर असुविधापूर्ण लगेगा, जैसे कि आप रोग से पीड़ित हो रहे हों। साधना अभ्यास आपको आपके जीवन के मूल से शुद्ध करने के लिए है। मानव शरीर एक पेड़ के वार्षिक छल्लों की तरह होता है जहां प्रत्येक छल्ले में रोग कर्म होते हैं। इसलिए आपका शरीर ठीक मध्य से शुद्ध किया जाना आवश्यक है। यदि सारा कर्म एक बार में ही बाहर निकाल दिया जाये, तो आप इसे सहन नही कर पायेंगे, क्योंकी इससे आपका जीवन खतरे में पड़ सकता है। एक बार में केवल एक या दो हिस्से ही बाहर निकाले जा सकते हैं, जिससे आप इसे सहन कर सकें व पीड़ा द्वारा अपने कर्मों का भुगतान कर सकें। किन्तु मेरे द्वारा आपके लिऐ कर्म हटाने के पश्चात केवल यह एक छोटा सा भाग ही आपको पीडा सहने के लिए शेष बचता है। यह तब तक जारी रहेगा

जब तक आपकी साधना त्रिलोक-फा-सिद्धांत (शुद्ध श्वेत शरीर) के उच्च्तम स्तर पर नहीं पहुंच जाती, तब आपका सम्पूर्ण कर्म बाहर निकाल दिया गया होगा। हाँलाकी, कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनके रोग-कर्म बहुत कम हैं, और कुछ अन्य विशेष उदाहरण भी हैं। पर-त्रिलोक-फा साधना में शुद्ध अरहत शरीर की साधना की जाती है—ऐसा शरीर जिसमें कोई रोग-कर्म नहीं होता। किन्तु उस व्यक्ति के लिये जिसने अभी साधना परिपूर्ण नहीं की है और जो अभी पर-त्रिलोक-फा के उच्च स्तरों की ओर साधना कर रहा है, वह अभी भी पीड़ित होगा और अपने स्तर में उन्नति के लिए कठिनाइयों और परिक्षाओं का सामना करेगा। उसे केवल पारस्पारिक तनाव या शिनशिंग के दायरे की कुछ वस्तुओं का सामना करना होगा और अपने मोहभावों का और अधिक त्याग करना होगा; उसके पास अब कोई शारीरिक रोग कर्म नही होंगें।

रोग कर्म कुछ ऐसा नहीं है जिसे एक साधारण व्यक्ति के लिए सहज ही हटाया जा सके; व्यक्ति जो साधक नहीं है उसके लिए ऐसा करना बिलकुल असंभव है, उसे चिकित्सा उपचार पर निर्भर होना आवश्यक है। एक साधारण व्यक्ति के लिए इच्छानुसार ऐसा करना वास्तव में दिव्यलोक के नियमों की अवहेलना करना है, क्योंकि इसका अर्थ होगा कि व्यक्ति कर्म का भुगतान किये बिना बुरे कार्य कर सकता है। यह कदापि स्वीकृत नहीं होगा कि कोई व्यक्ति अपने ऋण न चुकाए—दिव्यलोक के सिद्धान्त इसकी अनुमति नहीं देते ! यहाँ तक कि साधारण चीगोंग उपचार भी कर्म को व्यक्ति के शरीर के अन्दर की ओर दबा देते हैं। जब किसी व्यक्ति के कर्म बहुत अधिक हो चुके होते है और वह अब भी बुरे कार्य करता है, वह अपनी मृत्यु के समय विनाश का सामना करेगा—शरीर और आत्मा दोनों का पूर्ण विनाश—जो सम्पूर्ण विघटन होगा। किसी मनुष्य के रोग का उपचार करते समय, एक महान ज्ञानप्राप्त व्यक्ति उसके रोग के कार्मिक कारण को पूर्ण रूप से हटा सकता है, पर यह मुख्य रूप से लोगों को बचाने के उद्देश्य से किया जाता है।

ली होंगजी
मार्च 10,1996

(29) साधक के लिये टालने योग्य वस्तुएं

जो अपनी प्रतिष्ठा का मोह रखते है वे एक दुष्ट मार्ग का अभ्यास करते है, जो स्वार्थ से भरा है।

एक बार इस जगत में प्रसिद्ध हो जाने पर, वे निश्चित ही अच्छी बातें कहेंगे किन्तु उसका अर्थ बुरा होगा, जिससे लोग गुमराह होंगे और 'फा' की अवहेलना होगी।

जो धन से मोह रखते है वे संपत्ती की चाह रखते हैं और साधना करने का ढोंग रचाते हैं। अभ्यास एवं फा की अवहेलना करते हुए, वे बुद्धत्व की साधना करने की बजाय अपने जीवनकाल व्यर्थ करते हैं।

जो वासना से मोह रखते है वे दुष्ट लोगों से भिन्न नहीं हैं। शास्त्रों को पढ़ते समय, वे यहाँ-वहाँ छिपी निगाहें भी डाल लेते है; वे ताओ से बहुत दूर हैं और दुष्ट, साधारण लोग हैं।

जो अपने परिवार के मोह में बंधे है वे निश्चित ही उस मोह में जलेंगे, उलझेंगे और पीड़ित होंगे। जीवनभर मोह के धागों से खींचें जाने और त्रस्त होने पर, वे अपने जीवन के अंत में पश्चाताप के लिये भी देरी महसूस करेंगे।

ली होंगजी
अप्रिल 15,1996

(30) उत्तम सामंजस्य

(I)

विभिन्न कार्यस्थल वातावरण में लोग हत्या के विभिन्न पहलुओं में लिप्त हैं। जीवों का संतुलन विभिन्न तरीकों में प्रकट होता है। एक साधक के तौर पर, सर्वप्रथम आपको अपने सभी मोहभावों को त्याग देना चाहिये और मानव समाज के तौर-तरीकों के अनुरूप रहना चाहिये, क्योंकि यह फा की एक निश्चित स्तर पर अभिव्यक्ति को बनाये रखना है। यदि किसी ने भी मानवीय कार्य नहीं किये होते तो इस स्तर पर फा का अस्तित्व समाप्त हो जाता।

(II)

फा के अंतर्गत जीव स्वाभाविक रूप से जीते और मरते हैं। ब्रह्माण्ड उत्पत्ति, स्थिरता एवं विनाश के चक्र से गुजरता है तथा मनुष्य जन्म, बुढ़ापा, रोग एवं मृत्यु से गुजरता है। जीवन के संतुलन के लिए अप्राकृतिक जन्म और मृत्यु भी होते हैं। सहनशीलता में त्याग है, और पूर्ण त्याग त्रुटिहीन होने का एक ऊँचे स्तर का सिद्धांत है।

ली होंगजी
अप्रेल 19, 1996

(31) त्रुटि-हीन

सहनशीलता में परित्याग होता है। परित्याग करने के लिये समर्थ होना व्यक्ति के साधना में उन्नति का परिणाम है। 'फा' के विभिन्न स्तर होते हैं। एक साधक की 'फा' की समझ उसके साधना स्तर पर 'फा' की समझ है। विभिन्न साधक 'फा' को विभिन्न तरीकों से समझते हैं क्योंकी वे भिन्न स्तरों पर हैं। भिन्न स्तरों पर साधकों के लिये 'फा' की भिन्न आवश्यकताये होती हैं। त्याग का प्रमाण व्यक्ति के साधारण मानव मोहभावों से अनासक्त होने में मिलता है। यदि व्यक्ति वास्तव में अपना हृदय अप्रभावित रखते हुए शांतिपूर्वक सब कुछ त्याग दे, वह पहले ही उस स्तर पर पहुँच चुका है। फिर भी साधना अभ्यास करना स्वयं में सुधार लाना है : आप पहले ही मोहभाव छोड़ सकते हैं, तो फिर मोहभाव का डर भी क्यों न छोड़ दें? तो क्या त्रुटि-हीनता के बिना त्याग उच्चतर त्याग नहीं है? फिर भी कोई साधक या साधारण व्यक्ति जो मौलिक त्याग भी नही कर सकता यदि इस सिद्धान्त की चर्चा करे, वह उन मोहभावों को जिन्हे वह छोड नही सकता को वास्तव में बहाने बना कर 'फा' की अवहेलना कर रहा है।

ली होंगजी
अप्रेल 26, 1996

(32) साधना और कार्य

मठों के पेशेवर साधकों के अतिरिक्त, हमारे फालुन दाफा के बहुसंख्याक शिष्य साधारण लोगो के समाज में साधना अभ्यास कर रहे हैं। दाफा का अध्ययन एवं अभ्यास करके, अब आप प्रसिद्धि एवं व्यक्तिगत स्वार्थ को हल्केपन से ले पाने में समर्थ हैं। किन्तु, फा की गहरी समझ न होने से एक समस्या खड़ी हुई है : कुछ साधकों ने साधारण लोगों के बीच के अपने काम छोड़ दिए हैं या नेतृत्व पद के लिए मिल रही पदोन्नति को ठुकरा दिया है। इससे उनके जीवन एवं कार्य में अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न हुए हैं, जिससे उनकी साधना सीधे प्रभावित हुई है। कुछ शालीन व्यापारियों की सोच है कि उन्होने धन को हलकेपन से लिया है, और उसी समय, यह समझा कि व्यापार करने से दूसरों को नुकसान पहुंच सकता है और स्वयं उनकी साधना प्रभावित हो सकती है। उन्होने अपने व्यापार तक छोड़ दिये हैं।

वास्तव में, दाफा की शिक्षाएं अथाह हैं। साधारण मानव बंधनों को त्याग देने का अर्थ यह नहीं है कि आप साधारण लोगों के व्यवसाय छोड़ दो। प्रसिद्धि और स्वार्थ छोड़ देने का अर्थ यह नहीं है कि आप समाज के साधारण लोगों से दूर हो जाओ। मैने अनेक बार इंगित किया है की वे जो साधारण लोगों के समाज मे साधना करते हैं उन्हें साधारण लोगों के समाज के तौर-तरीकों के अनुरूप होना चाहिये।

दूसरे दृष्टीकोण से देखा जाए तो, यदि साधारण लोगों के समाज में सभी अधिकारपूर्ण पद हमारे जैसे लोगों द्वारा भरे जाएं जो अपनी प्रतिष्ठा एवं स्वार्थ की चिंता छोड़ सकते हैं, तो इससे लोगो को कितना अधिक लाभ होगा? और यदि लालची लोग सत्ता हासिल कर लेते हैं तो समाज को क्या मिलेगा? यदि सभी व्यापारी दाफा के साधक होते तो समाज की नैतिकता कैसी होती?

ब्रह्माण्ड का दाफा (बुद्ध फा), उच्चतम स्तर से लेकर निम्नतम स्तर तक सुसंगत और संपूर्ण है। आपको पता होना चाहिये कि साधारण मानव समाज भी फा का एक स्तर है। यदि हर कोई दाफा का अभ्यास करे और समाज में अपने व्यवसाय छोड़ दे, तो साधारण मानव समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा, और साथ ही फा के इस स्तर का भी। साधारण मानव समाज फा के निम्नतम स्तर की अभिव्यक्ति है, और इस स्तर पर यह बुद्ध फा के लिये जीवन एवं पदार्थ के अस्तित्व का स्वरूप भी है।

ली होंगज़ी
अप्रैल 26, 1996

(33) सुधार

वर्तमान में, रिसर्च सोसायटी द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित पंक्तियाँ 'फा' के तौर पर या मेरे शब्द कहकर, अलग-अलग क्षेत्रों में फैलाई और पढाई जा रही हैं:

सावधानी पूर्वक दाफा को पढो,

सच्चाई से शिनशिंग की साधना करो,

परिश्रम से व्यायाम करो,

... इत्यादि।

वास्तव में, ये मेरे शब्द नहीं है, न हीं उनका कोई गहरा अर्थ है—निश्चित ही यह फा नहीं है। "सावधानी पूर्वक पढो" का अर्थ मेरे फा के पढ़ने की आवश्यकताओं से बहुत ही भिन्न है। वस्तुतः, ''फा का अध्ययन'' लेख जो मैने सितंबर 9, 1995 को लिखा था; उसमें पुस्तक पढ़ने के बारे में बहुत ही स्पष्टता से बताया था। इसके अतिरिक्त, ''सावधानी पूर्वक पढ़ने'' के अर्थ से “फा के अध्ययन” में गहरा व्यवधान हुआ है। आगे से, आपको इस समस्या की गंभीरता पर ध्यान देना चाहिये। मैने भारत से बुद्धमत के लुप्त होने के कारण एवं उससे सीख लेने के बारे में बात की है। यदि भविष्य में कोई सावधानी नही रखी गई, यह फा के विघटन का आरम्भ होगा। सतर्क रहें : जब समस्या उत्पन्न होती है, यह खोजने का प्रयास न करें कि उत्तरदायी कौन है। इसके बजाय, आपको अपना स्वयं का आचरण देखना चाहिये। यह जानने का प्रयास न करें कि उन्हे किसने लिखा है। इससे सीख लें और भविष्य में सचेत रहें।

ली होंगज़ी
अप्रैल 28, 1996

(34) अपरिवर्तनीय

ऐसा लगता है यदि हमें दाफा को हमेशा के लिये अपरिवर्तनीय रखना है तो इसमें अभी भी एक समस्या है। जैसे कि, कुछ ऐसे शिष्य हैं जो अपनी दिखावे की मानसिकता से और अलग दिखने की चाह में, जैसे ही अवसर मिलता है दाफा में व्यवधान उत्पन्न करने वाले काम करते हैं। यह कभी कभी वास्तव में गंभीर हो जाता है। उदाहरण के लिये, हाल ही में कोई यह कह रहा है कि मैंने किसी शिष्य को व्यायाम के सार व्यक्तिगत रूप से सिखाए हैं (वास्तविकता यह है कि मैंने उस शिष्य के कहने पर केवल उसकी क्रियाओं में कुछ सुधार किया था)। इसके फलस्वरूप पिछले कुछ वर्षों से व्यायाम की क्रियाएं जो मैं सिखा रहा हूँ वे अमान्य हो जाती हैं। मेरे यहाँ होते हुए और इस स्थिति में कि मेरे शिक्षण सम्बन्धी विडियो टेप भी उपलब्ध हैं, इस व्यक्ति ने सार्वजनिक रूप से दाफा की व्यायाम क्रियाओं में फेरबदल किया। उसने शिष्यों को विडियो टेप के अनुसार नहीं बल्कि उसके अनुसार व्यायाम करने के लिये कहा, और दावा किया कि गुरुजी के पास उच्च स्तरीय गोंग है, वे अपने शिष्यों से अलग हैं, इत्यादि। उसने शिष्यों को पहले उनकी स्थिति के अनुसार व्यायाम करने, और भविष्य में क्रमशः बदलाव करने के लिये कहा, इत्यादि।

एकदम प्रारंभ से ही मैने व्यायामों को उनकी संपूर्णता में सिखाया है, क्योंकी मुझे चिंता थी कि कुछ शिष्य इसमें मनमाने बदलाव कर सकते हैं। एक बार शक्ति यन्त्र प्रणाली स्थापित हो जाने पर कभी बदली नही जा सकती। यह समस्या महत्वहीन दिखाई देती है, परंतु यह वास्तव में दाफा में गंभीर विघ्न का आरम्भ है। कुछ लोग सीखने के दौरान गति-क्रियाओं को अपने अनुसार समझ लेते हैं और शिष्यों को उसी तरीके से करने के लिए कहते हैं। इस प्रकार करना सबसे भिन्न होने का प्रयास करने जैसा है। इससे वर्तमान में अलग-अलग क्षेत्रों में बहुत गंभीर प्रभाव पड़ा है। मेरे शिष्यों! मेरे शिक्षण सम्बन्धी विडीओ टेप अभी भी उपलब्ध हैं—फिर आप इन लोगों को इतनी तत्परता से क्यों मान लेते हो?! दाफा इस विश्व का एक पवित्र, महान फा है। यदि आप

इसमें जरा भी विघ्न डालते हैं तो यह कितना विशाल पाप होगा! एक साधक होने के नाते, आपको सुस्पष्ट और गरिमामय तरीके से साधना का अभ्यास करना चाहिये और पूर्ण चित्रण को समझना चाहिये। यह कैसे हो सकता है कि सभी की गति-क्रियाएँ बिना किसी अंतर के बिल्कुल एक-समान हों? ऐसी छोटी छोटी बातों पर अपना ध्यान केंद्रित न करें। व्यायाम गति-क्रियाएँ परिपूर्णता तक पहुँचने का एक मार्ग हैं और वे निश्चित ही महत्वपूर्ण हैं। किन्तु, आपको अपना प्रयास अपने शिनशिंग बढ़ाने में समर्पित करना चाहिए, न कि कहीं अटके रहने में। वस्तुतः, दाफा के लिए अधिकांश व्यवधान भीतर से आते है, स्वयं साधको के द्वारा। बाहय कारक कुछ व्यक्तियों को केवल प्रभावित ही कर सकते हैं और फा में फेरबदल करने में असमर्थ हैं। वर्तमान में या भविष्य में, वे लोग जो दाफा की अवहेलना कर सकते हैं कोई और नहीं बल्कि हमारे अभ्यासी ही हो सकते हैं। सचेत रहिये! हमारा फा हीरे की तरह ठोस एवं अपरिवर्तनीय है। किसी भी परिस्थिति या किसी भी कारणवश कोई भी गति-क्रियाओं में जरा भी बदलाव नहीं कर सकता जिनसे हमें परिपूर्णता तक पहुंचना होता है। अन्यथा, यह व्यक्ति फा की अवहेलना कर रहा है चाहे उसका उद्देश्य अच्छा हो या बुरा।

ली होंगज़ी
मई 11, 1996

(35) निराधार वचन न कहें

हाल ही में एक बात प्रचलन में है। वह है, जब अभ्यासी दाफा का प्रचार करते हैं और परिणामस्वरुप कुछ लोग जिनके पूर्वनिर्धारित संबंध हैं, उन्हें फा प्राप्त करने और साधना अभ्यास आरंभ करने में मदद करते हैं, इनमें से कुछ अभ्यासी यह दावा करते हैं कि उन्होंने लोगों को बचा लिया है। वे कहते हैं, "आज मैंने कुछ लोगों को बचाया, और आपने कुछ और लोगों को बचाया," इत्यादि। वास्तव में, यह फा है जो लोगों को बचाता है, और केवल गुरु ही इसे कर सकते हैं। आप केवल पूर्वनिर्धारित संबंध वाले लोगों को फा प्राप्त करने में मदद करते हैं। उन्हें वास्तव में बचाया जा सकता है या नहीं केवल इस पर निर्भर करता है कि क्या वे साधना द्वारा परिपूर्णता तक पहुँच पाते हैं। सावधान रहें : एक बुद्ध ऐसे निराधार वचनों से स्तंभित हो जायेगें, भले ही वे जान बूझकर कहे गए हों या नहीं। स्वयं के साधना अभ्यास में विघ्न उत्पन्न न करें। इस संबंध में आपको अपनी बोल-चाल की साधना पर भी ध्यान देना चाहिए। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप समझ सकेगें।

ली होंगज़ी
मई 21, 1996

(36) जागृति

दाफा अभ्यास की वास्तविक साधना का समय सीमित है। बहुत से शिष्य समझ चुके हैं कि उन्हे अब अविलम्ब और यत्न से निरंतर आगे बढ़ना होगा। फिर भी कुछ शिष्य अपने समय का मूल्य नही समझते और अपना ध्यान महत्वहीन मुद्दों पर केन्द्रित करते हैं। जबसे यह पुस्तक 'ज़ुआन फालुन' प्रकाशित की गयी है, बहुत से लोगों ने मेरे व्याख्यान की रिकॉर्डिंग की तुलना पुस्तक से की और दावा किया कि रिसर्च सोसायटी ने गुरु के शब्द बदल दिए हैं। कुछ और लोगों ने कहा कि यह पुस्तक अमुक व्यक्ति की सहायता से लिखी गयी है, और इस प्रकार उन्होने दाफा की अवहेलना की है। मैं अभी आप से कहता हूँ कि दाफा मुझसे, ली होंगज़ी, से संबंधित है। यह आपके उद्धार के लिये सिखाया गया है और मेरे मुख द्वारा बोला गया है। इसके अतिरिक्त, जब मैंने फा सिखाया, मैंने कोई आलेख या अन्य साधन का उपयोग नहीं किया, केवल एक कागज़ का टुकड़ा

उस विषय पर कि मैंने शिष्यों को क्या शिक्षा देनी है; इसपर काफी साधारण लिखा हुआ था, केवल कुछ शब्द जो कोई और नहीं समझ सकता था। हर बार जब मैंने फा की शिक्षा दी, मैंने इसे अलग-अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया और शिष्यों की समझ के अनुसार बोला। तो हर बार जब मैंने फा की शिक्षा दी, मैंने उसी मुद्दे को अलग दृष्टिकोण से संबोधित किया। इसके अतिरिक्त, यह फा की पुस्तक ब्रह्माण्ड की प्रकृति का प्रतिनिधित्व करती है और यह महान बुद्ध फा की सच्ची अभिव्यक्ति है। यह वह है जो मेरे पास मूल रूप से था—वह जिसका मैंने साधना अभ्यास द्वारा ज्ञानोदय के पश्चात पुनः स्मरण किया। तब मैंने इसे साधारण मानवीय भाषा में सार्वजनिक किया, और साथ ही इसे आपको और जो दिव्यलोकों में हैं उन्हें सिखाया, जिससे फा द्वारा ब्रह्माण्ड का संशोधन हो सके। शिष्यों के लिए साधना अभ्यास सुगम करने के लिए, मैंने कुछ शिष्यों को मेरे मूल शब्दों में बिना किसी बदलाव किये टेप रिकॉर्डिंग से मेरे व्याख्यान की प्रतिलिपि बनाने का काम सौंपा। फिर उन्होंने यह मुझे अवलोकन के लिए दिया। शिष्यों ने केवल मेरे अवलोकन की प्रतिलिपि की या उसे कंप्यूटर पर टाइप किया जिससे मैं पुनः अवलोकन कर सकूं। जहाँ तक ज़ुआन फालुन की बात है, मैंने स्वयं इसके अंतिम आलेख का प्रकाशन से पहले तीन बार अवलोकन किया।

किसी ने कभी भी इस दाफा की पुस्तक के विषय-वस्तु में थोडा सा भी बदलाव नहीं किया। और फिर, ऐसे भला कौन कर सकता था? पहला, लोगों की साधना अभ्यास में सहायता करने के लिए मैंने अपने कई फा-व्याख्यानों को अवलोकन करते समय मिश्रित किया। दूसरा, फा पर व्याख्यान देते समय, मैंने शिष्यों की विभिन्न समझने की क्षमता और उस समय की परिस्थितियों और दशा के अनुसार शिक्षा दी थी; इस कारण, मुझे इन्हें पुस्तक में सम्पादित करते समय भाषा की रचना में सुधार करने पड़े। तीसरा, जब साधक इसे पढ़ते हैं, तब व्याख्यान और लिखित भाषा के बीच के अंतर के कारण गलतफहमियां उत्पन्न हो सकती हैं, इसलिए सुधार करने की आवश्यकता थी। फिर भी, मेरे फा पर व्याख्यानों के स्वरूप और बोल-चाल की भाषा को संरक्षित रखा गया। *ज़ुआन फालुन (अंक दो),* और *फालुन दाफा के विषय की व्याख्या,* का भी प्रकाशित करने से पहले मेरे द्वारा व्यक्तिगत तौर पर अवलोकन किया गया। *ज़ुआन फालुन (अंक दो)* को लिखते समय मैंने विभिन्न स्तरों के विचारों को सम्मिलित किया है, जिससे कुछ लोगों को लिखने के ढंग में बदलाव नज़र आता है और वे इससे उलझन में पड़ जाते हैं। पहली बात तो यह है कि ये साधारण मानवीय बातें नहीं हैं।

वास्तव में, *अंक दो* भविष्य की पीढियों को आज के मानवजाति के पतन की सीमा से अवगत कराने के लिए रहेगा, और इस प्रकार लोगों के लिए यह एक गंभीर ऐतिहासिक सबक छोड़ जाएगा। चीनी फालुन गोंग, इसके संशोधित संस्करण सहित, लोगों को आरंभिक तौर पर समझने के लिए चीगोंग के रूप में केवल अल्पकालिक सामग्री है।

फा का व्यवधान कई रूप धारण करता है, जिसमें से शिष्यों के स्वयं द्वारा अनजाने में हुए व्यवधान को पहचाना सबसे कठिन होता है। शाक्यमुनि के बुद्धमत का विकृत होना इसी तरह प्रारंभ हुआ था और यह गंभीर सबक है।

शिष्यों को यह याद रखना चाहिए: सभी फालुन के लेखन मेरे सिखाए गए फा हैं, और मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से संशोधित और संपादित किये गए हैं। अब के बाद, किसी को भी मेरे फा-व्याख्यानों की टेप रिकॉर्डिंग में से कुछ अंश निकाल कर लेने की अनुमति नहीं है, न ही उन्हें लिखित रूप में संकलित करने की। चाहे आप के कुछ भी बहाने हो, यह फिर भी फा का अनादर करना होगा; इसमें तथाकथित "भाषण और उसके लिखित रूप के बीच भिन्नताओं को अलग करना" शामिल है, इत्यादि।

ब्रह्माण्ड के क्रमिक विकास या मानवजाति के विकास में कुछ भी आकस्मिक नहीं है। मानव समाज का विकास इतिहास की व्यवस्था के अनुसार होता है और यह ब्रह्मांडीय वातावरण द्वारा संचालित रहता है। भविष्य में दुनिया भर में और अधिक लोग होंगे जो दाफा की शिक्षा प्राप्त करेंगे। यह कुछ ऐसा नहीं है जो कोई गर्म-मिजाज़ वाला व्यक्ति कर पाए केवल इसलिए क्योंकि वह चाहता है। इतने महत्व की घटना के साथ, ऐसा कैसे हो सकता कि इतिहास में इसके लिये विभिन्न व्यवस्थाएं न बनी हो? वास्तव में, मैंने जो कुछ भी किया है वह अनगिनत वर्षों पूर्व व्यवस्थित किया गया था, और इसमें यह भी शामिल है कि कौन फा प्राप्त करेगा—कुछ भी आकस्मिक नहीं है। लेकिन इन वस्तुओ का प्रकट होने का तरीका सामान्य मनुष्य को ध्यान में रखते हुए होता है। वास्तव में, इस जीवन में मेरे कई गुरुओं द्वारा मुझे दी गई वस्तुएं भी वे हैं जिन्हें मैंने जानबूझकर कुछ जीवनकाल पहले उनके पास प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित किया था। जब पूर्वनिर्धारित अवसर आया, तो उनके द्वारा उन वस्तुओ को मुझे वापस करने की व्यवस्था की गई ताकि मुझे मेरा फा पूर्ण रुप में याद आ जाए। इसलिए मैं आपको बताना चाहुंगा कि फा की इस पुस्तक का अध्ययन न केवल मानव स्तर पर किया जाता है, बल्कि उच्च स्तर के प्राणियो द्वारा भी किया जाता है। क्योंकि ब्रह्माण्ड का एक विशाल क्षेत्र ब्रह्मांड की प्रकृति से भटक गया है, इसे फा द्वारा सुधारना आवश्यक है। इस विशाल ब्रह्माण्ड में मानवजाति बहुत नगण्य है। पृथ्वी कुछ नहीं केवल इस ब्रह्माण्ड में धूल के एक कण के सामान है। यदि मनुष्य उच्च स्तर के प्राणियों द्वारा महत्व पाना चाहते हैं, तो उन्हें साधना का अभ्यास करना होगा और स्वयं भी उच्च स्तरीय प्राणी बनना होगा!

ली होंगजी

मई 27,1996

(37) फा की स्थिरता

पिछले दो वर्षों में अभ्यासिओं की साधना में कुछ समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। मैं शिष्यों की साधना का निरीक्षण करता रहा हूँ। इन उभरती हुई समस्याओं के तुरंत समाधान के लिए, मैं अक्सर विशिष्ट उद्देश्यों के लिए लघु लेख (जिन्हें हमारे शिष्य “शास्त्र” कहते हैं), अभ्यासियो की साधना में मार्गदर्शन के लिए लिखता हूँ। इसका उद्देश्य दाफा की साधना के लिए एक स्थिर, स्वस्थ और सही मार्ग छोड़ना है। भविष्य की पीढ़ियों के लिये, यदि उन्हें पूर्णता तक पहुंचना है तो, आने वाले हजारों वर्षों तक इसी मार्ग को अपनाते हुए साधना करनी होगी जो मैंने उनके लिए व्यक्तिगत रूप से छोड़ा है।

हाल ही में, हालांकि, मैंने हांगकांग में एक अभ्यास स्थल पर सामग्रियों का संग्रह देखा जो किसी और क्षेत्र से लाया गया था; उसमें दो छोटे लेख शामिल थे जिन्हें मैं प्रकाशित करने का इरादा नहीं रखता था। यह दाफा को क्षति पहुंचाने का एक गंभीर और जानबूझकर किया गया प्रयास था! यहां तक कि हमारे टेप रिकॉर्डिंग की स्वयं प्रतिलिपि करना भी अनुचित है! मैंने इसे "जागृति" लेख में स्पष्ट कर दिया है कि कोई भी मेरे टेप रिकॉर्डिंग के शब्दों से लिखित सामग्री बनाने का बहाना न करे—ऐसा करना फा को अपमानित करना है। साथ ही, मैंने बार-बार जोर दिया है कि मेरे व्याख्यान के दौरान आपके लिखे हुए निजी लेखन का आप प्रसार नहीं कर सकते। आप अभी भी ऐसा क्यों करते हैं? कौन सी मनोदशा आपको इन्हें लिखने के लिए प्रेरित करती है? मैं आपको यह बता दूं कि मेरी अनेक अधिकारिक रूप से प्रकाशित पुस्तकों और मेरे हस्ताक्षरित दिनांकित लघु

लेख हैं और रिसर्च सोसाइटी द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में वितरित किए जाते हैं को छोड़कर, जो सब मेरी अनुमति के बिना लिखित है फा को अपमानित करना है। साधना आपका व्यक्तिगत मामला है, और यह स्वयं का निर्णय है कि आप क्या करते हो। सभी साधारण लोगों में आसुरिक-प्रकृति और बुद्ध-प्रकृति दोनों होती हैं। यदि व्यक्ति का मन उचित नहीं तो उस पर आसुरिक-प्रकृति प्रभावी होगी। मैं दोबारा बताना चाहुंगा कि कोई बाहरी व्यक्ति फा को कभी क्षति नहीं पहुंचा सकता। केवल शिष्य ही फा को नुकसान पहुंचा सकते हैं—यह याद रखें!

प्रत्येक कदम, जो मैं, ली होंगज़ी, उठाता हूँ वह भविष्य की पीढ़ियों तक दाफा के प्रसारण का अपरिवर्तनीय और अटल पथ है। इस तरह का एक विशाल फा एक पल की लोकप्रियता के बाद समाप्त नहीं होगा। आने वाले अनगिनत वर्षों में इसमें ज़रा सा भी विचलन नहीं आ सकता। अपने आचरण द्वारा दाफा की सुरक्षा हमेशा दाफा शिष्यों की ज़िम्मेदारी है, क्योंकि दाफा ब्रह्माण्ड के सभी संवेदनशील प्राणियों से संबंधित है, और इसमें आप भी शामिल हैं।

ली होंगजी
जून 11,1996

(38) साधना अभ्यास और जिम्मेदारी उठाना

लगन और दृढ़ता से साधना करने का उद्देश्य है कि जितना शीघ्र हो सके परिपूर्णता तक पहुंच सकें। एक साधक केवल वह है जो साधारण मनुष्य के मोहभावों को समाप्त करता है। शिष्यों, आपको इस बारे में स्पष्ट होना चाहिए कि आप क्या कर रहे हैं!

दाफा के प्रति ज़िम्मेदार होने के लिए, सहायक केंद्र, विभिन्न क्षेत्रों के सामान्य सहायक केंद्र, और रिसर्च सोसाइटी को किसी भी सहायक या शाखा के प्रभारी को बदलने का अधिकार है। इसलिए कभी-कभार, जिम्मेदार पदों पर आसीन लोगों को विभिन्न स्थितियों के अनुसार प्रतिस्थापित किया जा सकता है। क्योंकि प्रभारी व्यक्ति, सबसे पहले, एक साधक है जो यहां प्रभारी होने के बजाय साधना के अभ्यास के लिए आया है, उसे अपने स्थान से ऊपर और नीचे जाना स्वीकार्य होना चाहिए। जिम्मेदारी के साथ जो पद सौंपा गया है वह साधना अभ्यास के लिए है, फिर भी व्यक्ति जिम्मेदारी के पद के बिना भी उसी प्रकार साधना अभ्यास कर सकता है। यदि व्यक्ति अपने प्रतिस्थापित होने को स्वीकार नहीं कर पाता है, क्या यह उसके मोहभाव के कारण नहीं है? क्या यह उसके लिए उस मोहभाव से छुटकारा पाने का अच्छा अवसर नहीं है? यह देखते हुए, यदि वह अभी भी इस मोहभाव को नहीं छोड़ सकता है, तो यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि प्रतिस्थापन करना उचित है। जिम्मेदारी के पद से मोहभाव होना स्वयं ही साधना के लिए एक अपवित्र उद्देश्य है। तो मैं शिष्यों को याद दिलाना चाहूँगा : इस मोहभाव को छोड़े बिना आप परिपूर्णता तक नहीं पहुंच सकेंगे।

ली होंगजी
जून 12,1996

(39) शास्त्रों की हस्तलिखित प्रतियों का नियंत्रण

अधिक से अधिक लोग अब दाफा सीख रहे हैं, और हर सप्ताह यह संख्या दोगुनी हो रही है। प्रकाशकों द्वारा पुस्तकों की आपूर्ति अपर्याप्त है, जिस कारण वे मांग पूरा नहीं कर सकते। इसलिए पुस्तकें कुछ क्षेत्रों या ग्रामीण इलाकों में अनुपलब्ध हैं। कुछ शिष्यों ने मुझसे पूछा है कि उनकी दाफा की हस्तलिखित प्रतियों का क्या करें। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि वर्तमान समय में ज़ुआन फालुन या अन्य शास्त्रों की प्रतियां जिन्हें आपने दाफा के अध्ययन के दौरान हस्तलिखित किया है, आपके लिए उन्हें देने के लिए उपयुक्त है जो अभ्यास और फा को फैलाने के लिए ग्रामीण इलाकों में जाते हैं; जिससे वे किसानों तक पहुँच पाएं और साथ ही उनका आर्थिक बोझ भी कम हो सके। इसलिए, यह आवश्यक है कि शिष्यों की हस्तलिखित प्रतियाँ स्पष्ट लिखी हों जिससे सीमित शिक्षा वाले किसान उन्हें समझ सकें। हस्तलिखित प्रतियों में भी फा की उतनी ही शक्ति है जितनी छपी हुई पुस्तकों में।

ली होंगजी
जून 26, 1996

(40) फा सम्मेलन

शिष्यों के लिए यह आवश्यक है कि वे एक दूसरे के साथ अपनी साधना के अनुभव और सीख साझा करें। जब तक उनका दिखावे का आशय नहीं है, इसमें कोई समस्या नहीं है कि वे एक दूसरे की एक साथ प्रगति करने में सहायता करें। साधना अनुभवों को साझा करने वाले कुछ सम्मेलन दाफा फैलाने की सहायता के लिए विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित किए गए हैं। ये सभी सम्मेलन प्रारूप और विषय दोनों में उत्कृष्ट और अच्छे रहे हैं। किन्तु शिष्यों के व्याख्यानों को सहायता केंद्रों द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए जिससे राजनीतिक मुद्दों से बचा जा सके—जिनका साधना अभ्यास के साथ कोई लेना देना नहीं है—या ऐसे मुद्दे जो साधना अभ्यास और समाज में गलत प्रवृत्ति निर्धारित करते हैं। साथ ही, हमें सतही डींग हांकने से दूर रहना चाहिए—जो साधारण लोगों के सैद्धांतिक अध्ययन से प्राप्त होती है। दिखावे के आशय से, किसी को भी आधिकारिक रिपोर्ट की शैली में लेख संकलित करके उन्हें किसी बड़े सार्वजनिक व्याख्यान में प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

सामान्य सहायक केन्द्रों द्वारा आयोजित साधना अभ्यास के अनुभव साझा करने के बड़े सम्मलेन जो प्रांतीय या शहरी स्तर पर किये जाते हैं उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित नहीं किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन रिसर्च सोसाइटी द्वारा आयोजित किया जाना चाहिए, और इसे भी बार बार नहीं किया जाना चाहिए। एक वर्ष में एक बार पर्याप्त होगा (विशेष अवसरों को छोड़कर)। उन्हें एक औपचारिकता या प्रतिस्पर्धा में ना बदलें; बल्कि, इसे एक महत्वपूर्ण फा सम्मलेन बनाएं जिससे वास्तव में साधना में प्रगति आ सके।

ली होंगजी
जून 26,1996

(41) शिजिआज़ुआंग दाफा सामान्य सहायक केंद्र के नाम एक पत्र

शिजिआज़ुआंग दाफा सामान्य सहायक केंद्र :

मैंने यह सुना है कि साधना के अनुभवों को साझा करने के आपके सम्मेलन में कुछ बाधाएं आयी हैं। इसके तीन कारण हैं, जिनसे निश्चित ही आपको सीख प्राप्त होगी। वास्तव में, इस घटना ने बीजिंग और पूरे देश में दाफा गतिविधियों को सीधे प्रभावित किया है, और भविष्य में इसका साधारण दाफा गतिविधियों पर कुछ नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। मुझे लगता है कि आपको निश्चित ही इसका एहसास होगा और भविष्य में बेहतर करेंगे।

साथ ही, मैं जिंग झांनयी के सम्मलेनों के बारे में कुछ और कहना चाहूँगा। जिंग झांनयी के विषय में, ये विज्ञान के दृष्टिकोण से दाफा की वैज्ञानिक प्रकृति की पुष्टि के लिए थे, जिससे वैज्ञानिक और तकनीकी समुदाय या शैक्षिक दुनिया दाफा को समझ सके। उन्हें शिष्यों को व्याख्यान नहीं देना चाहिए था, क्योंकि ऐसा करने से कुछ भी अच्छा नहीं होता और केवल नए शिष्यों, या ऐसे साधक जिनकी फा की समझ परिपक्व नहीं है, उनके मोहभाव उत्पन्न हो सकते थे। ऐसे साधक जो फा का अच्छी तरह अध्ययन करते हैं, इस तरह के व्याख्यानों को सुनने की आवश्यकता के बिना, दाफा में अपनी दृढ़ साधना जारी रखेंगे।

और महत्वपूर्ण बात यह है कि, मैंने दो साल फा की शिक्षा दी है, और मैंने शिष्यों को साधना अभ्यास के लिए दो साल दिए हैं। शिष्यों के इन दो वर्षों के वास्तविक साधना करने के दौरान, मैंने और किसी गतिविधियों की अनुमति नहीं दी है जिनका शिष्यों के वास्तविक साधना से कोई सम्बन्ध न हो, जो उनके व्यवस्थित, चरण-दर-चरण सुधार की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करें। यदि व्याख्यान वैज्ञानिक और शैक्षिक समुदायों को दाफा की वैज्ञानिक प्रकृति के पुष्टिकरण के लिए नहीं दिए जाते हैं, बल्कि उन साधना करने वाले शिष्यों को दिए जाते हैं जिनके पास सीमित समय है, तो सोचें : क्या शिष्यों के लिए इससे अधिक कोई विघ्न हो सकता है? मैं शिष्यों को मिलता तक नहीं हूँ ताकि वे अशांत न हों। शिष्य मुझे देखने के बाद कम से कम कुछ दिनों तक शांत नहीं हो पाते हैं, और इससे मेरे फा-शरीर द्वारा उनके लिए की गई व्यवस्था में बाधा आती है। मैंने इस समस्या के बारे में रिसर्च सोसाइटी को बताया है, लेकिन हो सकता है यह जिंग झांनयी के साथ स्पष्ट नहीं किया गया हो। अब जबकि यह मामला खत्म हो गया है, आप में से किसी को भी यह निर्धारित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए कि इसका उत्तरदायी किसे ठहराना चाहिए। मुझे लगता है कि ऐसा होने का मुख्य कारण यह है कि आपको इसका आभास नहीं हुआ। किन्तु आपको अब से ध्यान देना होगा। आज हम जो कुछ भी करते हैं, वह आने वाले वर्षों में दाफा के प्रसार के लिए नींव रखता है, और साधना अभ्यास का एक परिपूर्ण, उचित, त्रुटि-रहित प्रारूप छोड़ता है। मैं आज यह बात किसी की आलोचना करने के लिए नहीं कह रहा हूं, बल्कि साधना अभ्यास के प्रारूप को सही करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसे छोड़ने के लिए कर हूँ।

इस पत्र को विभिन्न क्षेत्रों के सहायक केंद्रों में वितरित करें।

ली होंगज़ी
जून 26, 1996

(42) **आप के चरित्र में सुधार**

जैसे-जैसे दाफा की और अधिक गहनता से साधना की जा रही है, अनेक शिष्यों ने एक के बाद एक सफलतापूर्वक ज्ञानप्राप्ति या क्रमिक ज्ञानप्राप्ति की अवस्था प्राप्त की है। वे अन्य आयामों के वास्तविक, उत्कृष्ट, भव्य दृश्य देख सकते हैं। ज्ञानप्राप्ति की प्रक्रिया का अनुभव करने वाले शिष्य इतने उत्साहित हो जाते हैं कि वे मेरे फा-शरीर को "दूसरा गुरु" कहते हैं, या मेरे फा-शरीर को एक सच्चा और स्वतंत्र गुरु मानते हैं—यह एक गलत समझ है। फा-शरीर मेरे सर्वव्यापी बुद्धिमत्ता की प्रकट छवि हैं, किन्तु वह एक स्वतंत्र प्राणी नहीं है। कुछ अन्य शिष्य फालुन को "गुरु फालुन" कहते हैं। यह पूरी तरह, बिल्कुल गलत है। फालुन मेरे फा शक्ति की प्रकृति और दाफा के ज्ञान का एक और प्रकट रूप है—ये बातें इतनी अद्भुत हैं जिनका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। फालुन ब्रह्मांड के सभी पदार्थों के फा की प्रकृति की अभिव्यक्ति है, अति विशाल स्तर से अति सूक्ष्म स्तर तक, और यह एक स्वतंत्र सत्ता नहीं है।

जब आप मेरे फा-शरीर और फालुन को आपके लिए उन महान, चमत्कारी और अद्भुत वस्तुओं को करते हुए देखते हैं, आप शिष्यों को याद रखना चाहिए कि मेरे फा-शरीर या फालुन की साधारण मानवीय विचार से परख या प्रशंसा न करें। उस तरह की सोच निम्न ज्ञानोदय और निम्न शिनशिंग की एक मिश्रित अभिव्यक्ति है। वास्तव में, सभी अभिव्यक्त स्वरुप फा की विशाल शक्ति की ठोस अभिव्यक्तियाँ हैं जिनका फा को संशोधित करने और लोगों को बचाने के लिए मेरे द्वारा उपयोग किया जाता है।

ली होंगज़ी
जुलाई 2, 1996

(43) **शान (करूणा) की एक संक्षिप्त व्याख्या**

शान विभिन्न स्तरों पर और विभिन्न आयामों में ब्रह्मांड की प्रकृति की अभिव्यक्ति है। यह महान ज्ञान प्राप्त प्राणियों की मूल प्रकृति भी है। इसलिए, एक साधक को शान की साधना करनी चाहिए और ब्रह्मांड की प्रकृति ज़न-शान-रेन के साथ आत्मसात होना चाहिए। इस महान खगोलीय पिंड की उत्पत्ति ब्रह्मांड की प्रकृति, ज़न-शान-रेन से हुई थी। दाफा का सार्वजनिक रूप से सिखाया जाना ब्रह्मांड के प्राणियों की मूल प्रकृति को फिर से प्रदर्शित करता है। दाफा परिपूर्ण सामंजस्य में है : यदि "ज़न-शान-रेन" के तीन अक्षरों को अलग किया जाए, तब भी प्रत्येक में ज़न-शान-रेन पूरी तरह समाहित है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पदार्थ सूक्ष्म पदार्थ से बना है, जो स्वयं और भी सूक्ष्म पदार्थ से बना है—यह अंत तक चलता रहता है। इसलिए, ज़न में ज़न-शान-रेन निहित है, शान में ज़न-शान-रेन निहित है, और रेन में भी ज़न-शान-रेन निहित है। तो क्या ताओ विचारधारा की ज़न की साधना, ज़न-शेन-रेन की साधना नहीं है? क्या बुद्ध विचारधारा की शान की साधना, ज़न-शान-रेन की साधना नहीं है? वास्तव में, वे केवल अपने सतही रूपों में भिन्न हैं।

केवल शान की बात करें तो, जब यह मानव समाज में अभिव्यक्त होता है तो कुछ साधारण लोग जो साधारण लोगों के समाज से जुड़े हुए हैं, यह सामान्य मानवीय सामाजिक प्रश्न कर सकते हैं : "यदि हर कोई दाफा सीखता है और शान का पालन करता है, तो हम अपने विरुद्ध विदेशी आक्रमण या युद्धों से कैसे निपटेंगे?" वास्तव में, मैंने ज़ुआन फालुन में पहले ही कहा है कि मानव समाज का विकास विश्वक वातावरण के विकासक्रम के अनुसार चलता है। क्या मानव जाति के युद्ध आकस्मिक हैं? कोई क्षेत्र जिसमें बहुत सा कर्म है या कोई क्षेत्र है जहां लोगों के मन बुरे हो चुके हैं, वह निश्चित ही अस्थिर होगा। यदि किसी राष्ट्र को वास्तव में गुणकारी होना है, तो इसका कर्म बहुत कम होना चाहिए; तब निश्चित ही इसके विरुद्ध कोई युद्ध नहीं

होंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि दाफा के सिद्धांत इसका निषेध करते हैं, क्योंकि ब्रह्मांड की प्रकृति ही सब कुछ संचालित करती है। इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि किसी पवित्र राष्ट्र पर हमला होगा। ब्रह्मांड की प्रकृति—दाफा—सर्व व्यापी है और पूरे खगोलीय पिंड में अति विशाल स्तर से अति सूक्ष्म स्तर तक समाहित है। आज मैं जो दाफा सिखाता हूं उससे न केवल पूर्व के लोगों को, बल्कि पश्चिमी लोगों को भी साथ ही सिखाया जा रहा है। उनमें जो दयालु लोग हैं उनको भी बचाया जाना आवश्यक है। सभी राष्ट्र जो अगले, नए ऐतिहासिक युग में प्रवेश करने चाहिए को फा प्राप्त होगा और उनका सभी के साथ सुधार होगा। यह केवल एक राष्ट्र की बात नहीं है। मानव जाति का नैतिक मानक भी मूल मानव प्रकृति के स्तर पर दोबारा लौट आएगा।

ली होंगज़ी
जुलाई 20, 1996